रजिस्ट्री सं. डी.—(डी एन)—73 REGISTERED NO. D—(DN)—73

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 11] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 16, 1985 (फाल्गुन 25, 1906)
No. 11] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 16, 1985 (PHALGUNA 25, 1906)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	283
भाग I—खण्ड 2—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	343
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गये संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	—
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियां आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	267
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपलब्धियां आदि भी शामिल हैं)	693
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	1321
भाग II—खण्ड 3—उप-खंड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	29
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा किए गए सांविधिक नियम और आदेश	99
भाग III—खंड 1—उच्चतम न्यायालय, महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासनों, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	7749
भाग III—खंड 2—पैटेन्ट कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं और नोटिस	289
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अन्य द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं आदेश, विज्ञापन, और नोटिस शामिल हैं	673
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्ति और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस	43
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़े को दिखाने वाला अनुपूरक	

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	283
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence)	343
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4—Notification regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	267
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, by-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	693
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	1321
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories)	29
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence ..	99
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the Supreme Court, Auditor General, Union Public Service Commission, Railways Administrations, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	7749
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	289
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	673
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	43
PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi ..	*

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1985

स० 23-प्रैस/85.—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को वीरता के के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते है :—

1. श्री बाज सिंह भुल्लर, पी सी एस,
   अर्बन सीलिंग अफसर,
   अमृतसर।

   (पुरस्कार की प्रभावी तिथि 18 अक्तूबर, 1982)

18 अक्तूबर, 1982, को अमृतसर के कार्यपालक मजिस्ट्रेट श्री बाज सिंह भुल्लर पुलिस के साथ चौक बरबार साहिब अमृतसर में ड्यूटी पर तैनात किए गए थे। श्री हरमोहिन्दर सिंह संघू के नेतृत्व में 400–500 व्यक्तियों की एक हिंसक भीड़ चौक घंटाघर की तरफ से आई और पंजाब रोडवेज की एक बस, पुलिस की एक जीप तथा सराय गुरु रामदास के निकट खड़ी एक और बस को आग लगा दी। उसके बाद हिंसक भीड़ कटरा अहलूवालिया की ओर बढ़ी। जालंधर के पुलिस उप-अधीक्षक सुरजीत सिंह कहलों और अमृतसर के कार्यपालक मजस्ट्रिेट श्री बाज सिंह भुल्लर को इस क्रुद्ध हिंसक भीड़ को चौक कटरा अहलूवालिया की ओर बढ़ने से रोकने को कहा गया था ताकि हिन्दु और सिखों में दंगे न हों। तुरन्त श्री भुल्लर पुलिस दल सहित चौक कटरा अहलूवालिया पहुच गए और स्थिति पर काबू पा लिया। लेकिन कुछ देर बाद ही घातक हथियारों से लैस उस हिंसक भीड़ ने पुलिस दल पर हमला कर दिया और श्री सुरजीत सिंह कहलों को कृपाणों से जख्मी करके ऊपर उठा लिया। हिंसक भीड़ श्री कहलों को जलती हुई बस में डालना चाहती थी। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए श्री भुल्लर उस हिंसक भीड़ में कूद पड़े और श्री कहलों को बचा लिया। इस कारवाई में श्री भुल्लर के सिर पर चोटें आई और उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा।

इस प्रकार श्री बाज सिंह भुल्लर ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए मानव मात्र की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. श्री अशोक राजा गांगुली,
   विनहाटा कालेज कूच बिहार के छात्र।

   (पुरस्कार की प्रभावी तिथि 6 नवम्बर, 1982)

6 नवम्बर, 1982, को श्री अशोक राजा गांगुली सुपुत्र प्रो० आलोक कुमार गांगुली अपने विनहाटा कालेज प्रोफेसर क्वाटर की पहली मंजिल में अध्ययन कर रहे थे। लगभग 6 लोग अपने आपको विद्यार्थी बताकर उनके कमरे में घुस आए और उनकी ओर पाइप गन तानकर धमकी देते हुए कहा कि घर में रुपया-पैसा और जो भी कीमती चीजें हों हमारे हवाले कर दो। शोरगुल सुनकर प्रो० आलोक कुमार गांगुली कमरे में आए परन्तु लुटेरों ने तुरन्त बन्दूक उनकी तरफ तान दी। पिता की मौत का खतरा देख अशोक गांगुली लुटेरों से भिड़ गए और उनसे बंदूक छीन ली। उसी दौरान उन्हें छुरा मार दिया गया। तब प्रो० गांगुली ने बचाव के लिए।
आए और लुटेरे
निकले। छुरे के घाव के बावजूद अशोक गांगुली ने उनका पीछा किया। उसके बाद उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया।

इस प्रकार श्री अशोक राजा गांगुली ने अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना साहस और शौर्य का परिचय दिया।

3. 2851342 नायब सूबेदार जसवन्त सिंह, (मरणोपरान्त)
   मैकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री।

   (पुरस्कार की प्रभावी तिथि 10 नवम्बर, 1982)

10 नवम्बर, 1982, को जब मिलिटरी विशेष ट्रेन टुण्डला साउथ यार्ड में रुकी हुई थी तो एक विस्फोट की आवाज सुनाई दी और 3 टन वाहन पर रखी हुई कोई चीज सुलगती हुई दिखाई दी। उस गाड़ी के प्रशासनिक जे सी ओ नायब सूबेदार जसवंत सिंह और कुछ अन्य जवानों ने यह दृश्य देखा और तत्काल घटनास्थल की ओर भागे। उसकी घेरा-बंदी और आग बुझाने के लिए एक दल का गठन करने के बाद नायब सूबेदार जसवंत सिंह ने तारपोलीन काट देने और उसे नीचे खींचने का आदेश दिया ताकि आग बुझाई जा सके। आग बुझाने वाले दल के सदस्यों का उन्होंने स्वयं नेतृत्व किया तथा एक तरफ के रस्सों को कुल्हाड़ी से काटने लगे। जैसे ही दल के एक सदस्य हवलदार कान सिंह तारपोलीन खींचने के लिए बोनट के ऊपर चढ़े उन्होंने देखा कि नायक श्याम सिंह वहां पड़े हुए थे और उनके कपड़ों में आग लगी हुई थी। नायक श्याम सिंह को बचाते हुए उन्हें बिजली का शाक लगा और तारपोलीन खींच रहे अन्य सभी कार्मिकों को भी उससे बिजली का थोड़ा-बहुत झटका लगा। उसी दौरान नायब सूबेदार जसवंत सिंह को भी बिजली का भारी झटका लगा और वे दूर जाकर गिरे उन्हें रेलवे अस्पताल ले जाया गया लेकिन रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार जसवंत सिंह ने साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. 2862419 हवलदार कान सिंह, (मरणोपरान्त)
   मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री।

   (पुरस्कार की प्रभावी तिथि 10 नवम्बर, 1982)

10 नवम्बर, 1982, को जब मिलिटरी विशेष ट्रेन टुण्डला साउथ यार्ड में रुकी हुई थी तो एक विस्फोट की आवाज सुनाई दी और 3 टन वाहन पर रखी हुई कोई चीज सुलगती हुई दिखाई दी। उस गाड़ी के प्रशासनिक जे सी ओ नायब सूबेदार जसवंत सिंह ने भी वाहन के ऊपर कोई चीज सुलगती हुई देखी। हवलदार कान सिंह आग बुझाने के लिए बनाए गए दल के नेता बनाए गए उस दल ने तारपोलीन को काटना शुरु किया। हवलदार कान सिंह तारपोलीन खींचने के लिए बोनट के उपर चढ़े। बोनट पर खड़े होते ही उन्होंने नायक श्याम सिंह को नीचे पड़े हुए देखा। उनके कपड़ों पर आग लगी हुई थी। नायक श्याम सिंह को नीचे उतारने के लिए हवलदार कान सिंह बोनट से और उपर चढ़े लेकिन इतने में ही उन्हें बिजली का जोरदार झटका लगा और उनका सारा शरीर झुलस गया। उन्हें तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया जहां उनकी मृत्यु हो गई।

5 जी-27270 डी एम ई अमर सिंह,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 27 मार्च, 1983)

डी एम ई अमर सिंह मार्च से मई, 1983, के दौरान कारगिल लेह सड़क पर बर्फ हटाने के लिए डोजर चला रहे थे। हिमखंडों के बार-बार गिरने से यह काम हर कदम खतरे से भरा था और इस काम को शून्य से कम तापमान मे पूरा करने के लिए काफी सहनशक्ति और आत्म-संयम की जरूरत थी।

10 मार्च, 1983, को श्री अमर सिंह और उनका एक साथी एक हिमखंड के नीचे दब गए। सौभाग्य से उन्हे कोई चोट नहीं आई और वे फिर से डोजर चलाने मे लग गए।

27 मार्च, 1983, को 265 वे कि०मी० पर श्री अमर सिंह अपनी मशीन समेत दुबारा बर्फ के नीचे दब गए। 45 मिनट बर्फ हटाने के बाद उन्हे बाहर निकाला गया। लेकिन वे भयभीत नहीं हुए और अगले चौदह दिनो तक लगातार बर्फ हटाने के काम मे लगे रहे। बहुत विषम परिस्थितियो मे बराबर डटकर काम करते रहने से उनके अन्य साथियो का साहस बढ़ा और उन्हे ऊंचे बर्फीले पहाड़ो पर काम करने की प्रेरणा मिली।

इस प्रकार श्री अमर सिंह ने धैर्य, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

6 74510 राइफलमैन मनसु लिशु,
असम राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 28 मार्च, 1983)

28 मार्च, 1983, को 7 असम राइफल्स के राइफलमैन मनसु लिशु जो छुट्टियो मे अपने गांव गांधी ग्राम गए हुए थे, को बताया गया कि दो अनजान व्यक्ति जिनमे से एक के पास हथियार थे उस इलाके मे देखे गए थे।

राइफलमैन मनसु लिशु गाव के कुछ लोगों का साथ लेकर तुरन्त उस जगह की ओर दौड़े जहा उन अनजान व्यक्तियो को देखा गया था। वहां पहुंचते ही उन्होने अहुई अक्षेमाफा लिशु नामक एक संदिग्ध व्यक्ति को छिपने के स्थान से पकड़ लिया। दूसरा संदिग्ध व्यक्ति अखिजान फन्था लिशु अपना शस्त्र लेकर वहां से भाग खड़ा हुआ। लेकिन वह चारो ओर से घिर गया। श्री मनसु लिशु ने उसे ललकारा और उस पर कूद पड़े। उस पर उस संदिग्ध व्यक्ति ने उन पर गोली चला दी। सौभाग्य से गोली का निशाना चूक गया लेकिन एक ग्रामवासी बारूद से थोड़ा जल गया। फिर भी संदिग्ध व्यक्ति पकड़ा गया।

इस प्रकार राइफलमैन मनसु लिशु ने पहल-शक्ति, साहस, सूझबूझ और उच्चकोटि की जन-हित भावना का परिचय दिया।

7. जी-19955 डी एम ई सच्चिदानन्द, (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 6 अप्रैल, 1983)

जी–19955 डी–एम ई सच्चिदानन्द को श्रीनगर-लेह सड़क के द्रास-कारगिल क्षेत्र मे बर्फ हटाने के काम पर लगाया गया था। श्री सच्चिदानन्द को जो काम सौंपा गया था वह हर कदम खतरे से भरा हुआ था। 6 अप्रैल, 1983, को अचानक ऊपर पहाड़ से बर्फ फिसली और नीचे आते-आते उसने विशाल हिमखंड का रूप धारण कर लिया। डोजर चालक श्री सच्चिदानन्द के ऊपर वह हिमखंड पूरे जोर से आ गिरा जिससे उनकी मृत्यु ही गई।

इस प्रकार श्री सच्चिदानन्द ने दृढ़ता साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. जी–97975 पायनियर बिशन सिंह, (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 6 अप्रैल, 1983)

जी–97975 पायनियर बिशन सिंह को श्रीनगर-लेह सड़क के द्रास-कारगिल क्षेत्र मे डोजर चालक की मदद करने को कहा गया था।

6 अप्रैल 1983, को वह बर्फ हटाने के काम मे लगे थे और डोजर चालक का मार्गदर्शन कर रहे थे। उसी बीच अचानक ऊपर पहाड़ से बर्फ का एक बड़ा टुकड़ा नीचे की ओर फिसल कर आया और एक बड़े हिमखंड के रूप मे नीचे काम कर रहे पूरे दल के ऊपर आ गिरा। बाद मे पता चला कि चार व्यक्ति वहीं बर्फ मे दब गए और लापता हो गए जिनमे पायनियर बिशन सिंह भी शामिल थे। तीन दिन बाद उनका शव मिला।

इस प्रकार पायनियर बिशन सिंह ने साहस, धैर्य और अति असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9 स्क्वाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल, वी एम (10474), उड़ान (पायलट) (सेवा निवृत्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 21 अप्रैल, 1983)

स्क्वाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल अक्तूबर, 1977, से हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड मे परीक्षण उड़ान कार्यों मे सलग्न रहे हैं। 21 अप्रैल, 1983, को एक बार उन्हे अजीत विमान मे हाइड्रालिक खराबी का सामना करना पड़ा जिसकी वजह से नोज अडरकैरिज को झुकाने मे रुकावट पैदा हो गई। अडरकैरिज को नीचा करने की कोशिश मे विमान का इंजन भी बंद हो गया। उस आकस्मिक सकट से निपटने में उन्होने बड़े साहस तथा कौशल का परिचय दिया और जो तोड़ कोशिश करके इंजन को फिर से चालू करने और अडरकैरिज को नीचा करने में सफल हो गए। जिसके फलस्वरूप वे सुरक्षित नीचे उतर आए और विमान भी सही सलामत बच गया।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल ने असाधारण साहस, धैर्य, अद्वितीय सूझबूझ, व्यावसायिक कुशलता और उच्चकोटि की कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

10 लेफ्टिनेंट कर्नल मदन लाखी थडानी (आई०सी०–1702), आर्टिलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 15 जून, 1983)

लेफ्टि० कर्नल मदन लाखी थडानी उड़ान प्रशिक्षक हैं। वे उत्तर और पूर्व सिक्किम के दुर्गम क्षेत्रो मे उड़ान प्रशिक्षण कार्य मे लगे हैं। 15 जून, 1983, को सूचना मिली थी कि "जानसनो" चोटी पर जो 24482 फुट ऊंची है सिवानी अभियान के दो सदस्यो को बचाने के लिए तत्काल मिशन भेजा जाए। वे दो सदस्य 18000 फुट ऊंचाई पर बेस कैंप मे घायल पड़े थे। लेफ्टिनेंट कर्नल मदन लाखी थडानी को बचाव कार्य के लिए भेजा गया। उन्होने बहुत खराब मौसम मे 18000 फुट की ऊंचाई पर चट्टानो और बर्फ से ढंके इलाके मे अपना हैलीकाप्टर उतारा, घायलो को हैलीकोप्टर मे बिठाया और उन्हे बेस अस्पताल पहुंचा दिया गया।

इस प्रकार लेफ्टिनेट कर्नल मदन लाखी थडानी ने साहस, व्यावसायिक क्षमता और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11 जी–129181 पायनियर एन० राजन,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 18 जून, 1983)

फुंटशोलिंग थिम्पू सड़क भूटान की सबसे महत्वपूर्ण सड़क है क्योकि भूटान की राजधानी तथा अन्य महत्वपूर्ण जिलो के सचार का यही एक मात्र साधन है। 18 जून, 1983, को मूसलाधार वर्षा के कारण इस सड़क के 20.350वे किलोमीटर के पास भारी भूस्खलन हुआ जिससे सारी सचार व्यवस्था भग हो गई। मौसम बहुत खराब होने के कारण उस भूस्खलन को साफ करना कठिन और जोखिमपूर्ण हो गया था।

धुंध के कारण वहां दिखाई भी बहुत कम पड़ रहा था इसलिए जी–129181 पायनियर एन० राजन को भूस्खलन के कारण ध्वस्त सड़क के मध्य भाग मे तैनात किया गया ताकि वह सड़क ठीक करने वाले डोजर चालक को उपर से भूस्खलन या शिलाखड के गिरने के समय पर चेतावनी देकर उन्हे बचा सकें। उपर से गिरते हुए शिलाखंडो की

परवाह किए बिना पायनियर एन० राजन अपनी जान को जोखिम में डालकर बड़ी कुशलता से डोजर चालक को मार्गदर्शन देते रहे उस दौरान उन्हें चोटें भी आईं। उनकी सूझबूझ और समय पर खतरे की सूचना देने से न केवल डोजर और उसके चालक को बचाया जा सका बल्कि बहुत कम समय में सड़क को साफ करना संभव हो सका।

इस प्रकार पायनियर एन० राजन ने साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. 4248185 नायक जयगोविन्द सिंह,
बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 22 जुलाई, 1983)

22 जुलाई, 1983 की रात को मिजोरम में मामपुइ के पास के जंगलों में छिपे विद्रोहियों को पकड़ने के लिए छापामार दल को भेजा गया। छापामारी के दौरान नायक जयगोविन्द सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बिना विद्रोहियों पर तुरन्त हमला कर दिया। उनकी दिलेरी और साहसिक कार्रवाई से एक विद्रोही मारा गया और अन्य पकड़ लिए गए। इस कार्रवाई में दो राइफलें, 83 राउंड गोली-बारूद और महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद किये गए।

इस प्रकार नायक जयगोविन्द सिंह ने अपने जीवन को जोखिम में डालकर अनुकरणीय साहस और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. जे०सी०-81234 नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल,
असम राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 26 जुलाई, 1983)

26 जुलाई, 1983, को नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल उत्तर की ओर से कार्रवाई कर रही टुकड़ी के कमांडर थे और बम्प एरिया की ओर बढ़ रही मुख्य टुकड़ी का फायर सुरक्षा प्रदान करने का काम सौंपा गया था। वह टुकड़ी बंप एरिया से लगभग 500 गज की दूरी पर ही थी कि विद्रोहियों ने उस पर भीषण गोलीबारी शुरू कर दी। तब नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल से कहा गया कि वे आगे एक मजबूत स्थान पर मोर्चा सभालें और विद्रोहियों पर गोलीबारी करते रहें। वे तुरन्त उस स्थान की ओर आगे बढ़े जहां विद्रोही गोलीबारी कर रहे थे। उनकी इस कार्यवाही से वे घबरा गए और उससे मुख्य टुकड़ी का आगे बढ़ना आसान हो गया। छिपे विद्रोही दुविधा में भाग खड़े हुए लेकिन नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल की टुकड़ी की गोलीबारी ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास जंगलों में छिपने में नाकामयाब बना दिया।

उसके तुरन्त बाद नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल को आदेश दिया गया कि वे और आगे बढ़ें और दक्षिण पूर्वी क्षेत्र में छिपे विद्रोहियों की तलाश करना शुरू कर दें। वह मुख्य टुकड़ी जब लगभग 2 किलोमीटर आगे बढ़ी तो छिपे विद्रोहियों ने फिर से गोलीबारी शुरू कर दी। नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल ने उत्तर की ओर से जाकर देखा कि एक विद्रोही भी सभाले हुए था और फायर करने ही वाला था। दोनों में हाथापाई हुई लेकिन नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल ने उस पर काबू पा लिया और उसे धर पटका। उनकी समय पर की गई कार्रवाई से न केवल चोटी के विद्रोही और कुख्यात स्वयंभू लेफ्टिनेंट थींगो को पकड़ने में मदद मिली बल्कि सैनिकों का जीवन भी बचाया जा सका।

इस प्रकार नायब सूबेदार ज्योति प्रसाद नौटियाल ने अनुकरणीय साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

14. 82156 नायक मिचु खेमलुगन,
असम राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 26 जुलाई, 1983)

82156 नायक मिचु खेमलुगन 8 असम राइफल्स की डेनशोइ चौकी पर तैनात थे जो भारत-बर्मा सीमा के बहुत पास है। इस चौकी का काम भूमिगत नागाओं (यू०जी०) जिनके कैम्प बर्मा में थे, की सीमा पार गतिविधियों पर नजर रखना था। 26 जुलाई, 1983, को नायक मिचु खेमलुगन को सूचना मिली कि कुछ भूमिगत नागा सीमा में घुस आना चाहते थे और उस क्षेत्र में मार्गदर्शन कराने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। वह उस टुकड़ी को उस स्थान की ओर ले गए जहां भूमिगत नागाओं के छिपे होने की संभावना थी और वे ठीक उस समय वहां पहुंचे जबकि छिपे नागा उसी जगह वापस लौट रहे थे। सामना होते ही छिपे नागाओं ने गोली बारी शुरू कर दी। किसी को प्रतीक्षा किए बिना नायक मिचु खेमलुगन एक भूमिगत नागा पर झपट पड़े और जीन में बने शस्त्र के साथ उसे पकड़ लिया। बिजली के समान तेजी से की गई इस कार्रवाई के कारण अन्य भूमिगत नागा हतोत्साहित हो गए और सीमा पार भाग निकले।

इस कार्यवाही में नायक मिचु खेमलुगन ने पहल-शक्ति, साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. 4050829 लांस हवलदार गबर सिंह नेगी,
गढ़वाल राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 22 अगस्त, 1983)

22 अगस्त, 1983, को लांस हवलदार गबर सिंह नेगी एक हमला टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे जिसे मिजो नेशनल फ्रंट के घात लगातार घेरे गए दो सशस्त्र विद्रोहियों को पकड़ने का आदेश दिया गया था। विद्रोहियों ने आत्म-समर्पण करने की बजाए भाग निकलने की दुस्साहसपूर्ण चेष्टा की। विद्रोहियों की गोलीबारी के बीच लांस हवलदार गबर सिंह व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपनी हमला टुकड़ी को लेकर उन्हें पकड़ने दौड़ पड़े और अपनी सब-मशीन कारबाइन से अचूक निशाना लगाकर एक विद्रोही को मार गिराया।

इस कार्रवाई में लांस हवलदार गबर सिंह नेगी ने साहस, पहल-शक्ति और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. कैप्टन पवन चन्द्र भंडारी (आई०सी०-27743),
आर्टिलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 6 सितम्बर, 1983)

6 सितम्बर, 1983, को कैप्टन पवन चन्द्र भंडारी की 23100 फुट की ऊंचाई पर स्थित कुन चोटी पर आस्ट्रियन पर्वतारोहण अभियान की एक महिला के पहाड़ों में फंस जाने पर उसके बचाव के लिए भेजा गया था। कैप्टन भंडारी को हेलिकोप्टर से बाहर निकलकर आहत महिला तक पहुंचने के लिए काफी दूर तक चलना भी था। रास्ते में वे खुद एक पहाड़ी दरार में फंस गए लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। घटनास्थल पर पहुंचकर उन्हें उस महिला को बाहर निकालकर और खुद उठाकर हेलिकोप्टर तक लाना पड़ा।

इस प्रकार कैप्टन पवन चन्द्र भंडारी ने असाधारण साहस, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

17. कैप्टन गुरजीत सिंह बाजवा (आई०सी०-29693), वीर चक्र,
आर्टिलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 6 सितम्बर, 1983)

6 सितम्बर, 1983, को कैप्टन गुरजीत सिंह बाजवा को कुन चोटी की पहाड़ियों में आस्ट्रिया के पर्वतारोहण अभियान दल की एक महिला के पहाड़ में फंस जाने पर उसको बचाने के लिए एक बचाव मिशन भेजा गया। कैप्टन गुरजीत सिंह बाजवा ने अपना हेलिकोप्टर 19800 फुट की ऊंचाई पर ऐसे स्थान पर उतारा जो गहरी हिम दरारों से छितरा पड़ा था और उसकी ऊपरी सतह बिना जमी हिम से ढकी हुई थी जो घातक हो सकती थी और अपने सह-पायलट की मदद से महिला को वहां से सुरक्षित ले आए।

इस प्रकार कैप्टेन गुरजीत सिंह बाजवा ने साहस, पहल-शक्ति और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

18. 13734745 भूतपूर्व नायक बलवान सिंह, (सेवा निवृत्त), 8 जाक राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 8 सितम्बर, 1983)

8 सितम्बर, 1983, को सूचना मिली कि शत्रुओं के दो एजेंट देखे गए जो महत्वपूर्ण सीमावर्ती क्षेत्र के पास के गांव में पहुंचने वाले थे और उनमें से एक के पास पिस्तौल थी। जैसी ही वे दोनों एजेंट गांव में पहुंचे वहां के कुछ लोग उस पर नजर रखने के लिए उनके पीछे हो लिए। नायक बलवान सिंह (सेवानिवृत्त) जो उसी गांव के निवासी हैं, नजर बचाकर उनके पीछे लग गए और पिस्तौल की मार से अपने को दूर रखते हुए आगे बढ़ते रहे। जैसे ही उन्होंने देखा कि घुसपैठिए पूरी तरह सतर्क नहीं हैं वे उन पर झपट पड़े। उस झड़प के दौरान एक घुस पैठिए ने उन पर पिस्तौल से गोली चलाने की, कोशिश की लेकिन तब तक गांव के अन्य व्यक्ति भी उनकी सहायता के लिए पहुंच चुके थे। अतः उन्होंने उन दोनों घुसपैठियों पर काबू पा लिया। बाद में जांच पड़ताल करने पर पता चला कि वे दोनों जासूस थे और अनधिकृत रूप से भारत की सीमा में घुस आए थे तथा तोड़-फोड़ के इरादे से जम्मू जाना चाहते थे। दोनों को सेना अधिकारियों के सुपुर्द कर दिया गया।

इस कार्रवाई में नायक बलवान सिंह ने अनुकरणीय साहस, पहल शक्ति और उच्चकोटि की जन हित की भावना का परिचय दिया।

19. जी ओ–705 श्री विनय कुमार बसु, कार्यकारी इंजीनियर (सिविल)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 10 सितम्बर, 1983)

10/11 सितम्बर, 1983, की रात उत्तरी सिक्किम के मानुल (स्वस्तिक परियोजना) के पास भीषण भूस्खलन हुआ जिसमें जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स के कार्मिकों के मकान, मजदूरों की झोंपड़ियां और सरकारी भंडार घर पूरी तरह मिट गए या दब गए।

अफसर कमांडिंग श्रीविनय कुमार बसु, कार्यकारी इंजीनियर (सिविल) ने तुरंत बचाव और राहत कार्यों के लिए अपने साथ काम करने वाले लोगों को प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप वे लाखों रुपये की लागत का सरकारी सामान बचाने में सफल हुए। उत्तरी सिक्किम राज मार्ग को यातायात के लिए फिर से चालू करने के लिए स्वयं आवश्यक निर्णय लेकर काम आगे बढ़ाया जिससे थोड़े ही समय में वह सड़क फिर तैयार कर ली गई।

इस प्रकार श्री विनय कुमार बसु, कार्यकारी इंजीनियर (सिविल), ने अनुकरणीय साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. जी ओ–807 ए ई ई (सी) हर भजन सिंह साका,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 10 सितम्बर, 1983)

उत्तरी सिक्किम में 10/11 सितम्बर, 1983, की रात मानुल में एक भीषण भूस्खलन हुआ। दुर्घटनास्थल तक सड़क यातायात पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट हो गया। श्री हरभजन सिंह साका एक अन्य सैक्टर में तैनात थे। सड़क यातायात फिर से चालू करने के लिए उन्हें वहां से बुलाया गया। उन्होंने अपनी कार्यकुशलता के कारण बड़ी जल्दी ही सड़क यातायात पुनः चालू करवा दिया और बहुत कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने बड़े सुव्यवस्थित ढंग से काम करके अनेक भूस्खलनों के कारण बंद सड़कों को पुनः यातायात योग्य बनाया।

इस प्रकार श्री हरभजन सिंह साका ने धैर्य, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. जी ओ–1106 ए ई ई (सी) एस०एस०के० सुब्रह्मणियन,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 10 सितम्बर, 1983)

उत्तरी सिक्किम में 10/11 सितम्बर, 1983, की रात मानुल में एक भीषण भूस्खलन हुआ। दुर्घटनास्थल तक सड़क यातायात पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट हो गया। श्री एस०एस०के० सुब्रह्मणियन भूस्खलन के स्थान के समीप ही तैनात थे। उनकी यूनिट के कार्मिक तथा उनके परिवार उस भूस्खलन के शिकार हो गए थे। उन्होंने अपनी कार्यकुशलता से सड़क फिर से चालू करने का काम बहुत तेजी से शुरू कर दिया और उसके साथ ही जगह-जगह पर भूस्खलन के कारण सड़क पर जो मलबा आ गया था उसे भी बड़े सुव्यवस्थित ढंग से साफ करवाना आरम्भ किया।

इस प्रकार श्री एस०एस०के० सुब्रह्मणियन ने साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

22. 2675557 सिपाही राम नारायण सिंह, ग्रेनेडियर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 नवम्बर, 1983)

5 नवम्बर, 1983, को सिपाही राम नारायण सिंह तीन दिनों की छुट्टी पर 581 अप काचीगुडा एक्सप्रेस से नसीराबाद से अपने गांव भरतापुर जा रहे थे।

जब वह ट्रेन बंदनवारा और सिंघावल रेलवे स्टेशनों से होकर गुजर रही थी उन्होंने अपने बगल के डिब्बे से "बचाओ-बचाओ" की पुकार सुनी। तभी वे ट्रेन रोक ली गई और उन्होंने पांच हथियार बंद डकैतों को ट्रेन से कूद कर खेतों की तरफ भागते देखा। यह देखकर उन्होंने अपने साथी यात्रियों को पीछे आने को कहा और स्वयं ट्रेन से कूदकर उन डकैतों का पीछा करने लगे। डकैतो ने गोली चलाई जिससे दूसरे यात्रीगण तो डर गए लेकिन सिपाही राम नारायण सिंह उनका पीछा करते गए। उन्होंने खेत से एक लाठी उठायी और उससे एक डकैत को मारकर नीचे गिरा दिया। भयानक हाथापाई के बाद जिसमें उन्हें भी चोट लगी एक दूसरे डकैत को भी मार कर गिरा दिया। बाद में उन दोनों डकैतों को पुलिस को सौंप दिया गया।

इस कार्यवाही में सिपाही राम नारायण सिंह ने साहस, शौर्य और उच्चकोटि की जन हित की भावना का परिचय दिया।

23. विंग कमांडर विश्वनाथन नटराजन (10462), उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 28 दिसम्बर, 1983)

विंग कमांडर नटराजन तीसरे भारतीय अंटार्कटिक अभियान के साथ भेजी गई भारतीय वायुसेना की टुकड़ी में शामिल चार एम आई-8 पायलटों में से एक थे। 28 दिसम्बर 1983 को इन्हें जहाज पर से बेस कैम्प तक भारी निर्माण तथा अन्य सामग्री पहुंचाने का काम सौंपा गया। वहां इलाका अनजान और दुर्गम था। अनिश्चित और प्रतिकूल मौसम और बहुत तेज जमीनी हवाओं, फिसलती बर्फ और हर समय धुंधलका छाए रहने के कारण हेलिकोप्टर पर उड़ान करना बहुत कठिन था। इन सभी बाधाओं और अन्य हेलिकोप्टरों के न होने के बावजूद, विंग कमांडर नटराजन तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने 61.30 घंटे में 212 सार्टियां करके सभी दायित्व पूरे किए। यह उन्हीं के सतत प्रयत्नों का फल था कि भारी निर्माण सामग्री पहुंचाई जा सकी और सेना के इंजीनियर समय पर प्राप-स्टेशन का निर्माण पूरा कर सके।

इस प्रकार विंग कमांडर विश्वनाथन नटराजन ने साहस, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

24 सर्जन लैफ्टिनेंट कमांडर आलोक बैनर्जी (75248–टी)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 29 दिसम्बर, 1983)

सर्जन लेफ्टिनेंट कमाडर आलोक बैनर्जी अंटार्कटिक के तृतीय भारतीय अभियान दल के साथ जाने वाले चिकित्सा विशेषज्ञ थे। 29 दिसम्बर, 1983, को उन्हें पता चला कि एक एम आई–8 हेलिकाप्टर समुद्र मे गिर गया। वे शीघ्र ही डेक की तरफ भाग और दल के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर एमरजेंसी मामलों से निपटने मे हाथ बटाया। उन्होंने

विंग कमांडर आर०एस० टंडन, विंग कमांडर बी०डी० मधोक, सार्जेंट ए०वी० जाधव और सार्जेंट एस०बी० गुप्ता को बर्फ की परत में से निकाला और उसके बाद हुए मरीज के हाइपोथर्मिया की सीमा निर्धारित की। उन्होंने सार्जेंट ए०वी० जाधव से शुरू करके, जिनकी हालत खराब थी, हाइपोथर्मिया के प्रभाव को मिटाने के लिए एमरजेंसी व्यवस्था की। वे हाइपोथर्मिया के दुष्प्रभाव को जल्दी समाप्त करने में सफल हुए और सभी मरीजों की हालत को और ज्यादा बिगड़ने से बचा लिया। उसके बाद उन्होंने रात भर विंग कमांडर मधोक की हालत पर नजर रखी और उनकी देखभाल से मरीज की हालत सुबह तक संभल गई।

अंटार्कटिक के बेहद खराब सर्दी के लम्बे मौसम के दौरान और मानसिक तनावों में सर्जन लेफ्टिनेंट कमांडर बैनर्जी ने अकेले कई गंभीर मरीजों की देखभाल की जिनमें वे मरीज भी शामिल थे जिनको गंभीर चोटें आई थीं।

इस प्रकार सर्जन लेफ्टिनेंट कमांडर आलोक बैनर्जी ने साहस, व्यावसायिक कौशल और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

25. 280830 सार्जेंट श्याम बिहारी गुप्ता,
इन्स्ट्रूमेंट फिटर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 29 दिसम्बर 1983)

सार्जेंट श्याम बिहारी गुप्ता, अंटार्कटिक जाने वाले, तीसरे भारतीय वैज्ञानिक अभियान की वायु सेना टीम के तकनीकी सदस्य थे। अभियान की सफलता काफी हद तक एक मात्र उपलब्ध एम० आई०–8 हैलिकाप्टर की परिचारिकी सहायता पर निर्भर करती थी क्योंकि दूसरा एम– आई०–8 हेलिकाप्टर प्रयोग के लिए मौजूद नहीं था। वरिष्ठतम तकनीकी ट्रेड्समैन होने के नाते सार्जेंट गुप्ता ने अनुरक्षण कार्यकलापों की देखरेख के अपने नियत कार्य को पूरा करने के अलावा अपने साथी तकनीशियनों के साथ अनवरत काम किया और साथ ही हैलिकाप्टर पर माल लादने/उतारने में वायुकर्मियों की सहायता भी की।

29 दिसम्बर, 1983 को एम० आई०–8 हैलिकाप्टर जिसमें वे यात्रा कर रहे थे, दुर्घटनाग्रस्त होकर अंटार्कटिक की बर्फीली जलराशि में जा गिरा। हैलिकाप्टर बड़ी तेजी से डूबता जा रहा था और सार्जेंट गुप्ता सहित हैलिकाप्टर का पूरा कर्मी दल उसके अन्दर फंसा पड़ा था। ऐसी भयंकर स्थिति की चपेट में पड़े सार्जेंट गुप्ता बड़ी सूझ-बूझ और हिम्मत का परिचय देते हुए हैलिकाप्टर में फंसे कर्मियों की जान बचाने की जुगत ढूंढने में बराबर जुटे रहे। उन्होंने फ्लाइट लैफ्टिनेंट राय की सहायता से हैलिकाप्टर के काकपिट की दीवार तोड़कर बाहर निकलने का रास्ता बनाया और कर्मियों के बहुमूल्य जीवन बचाने में सहायता की। बाद में डूबते हैलिकाप्टर से अपनी जान बचाने के लिए उन्हें तब तक बर्फीले समुद्र में 15 से 20 मीटर तक तैर कर जाना पड़ा जब तक कि नौसेना की बचाव नौका ने उन्हें बचा नहीं लिया। उस खौफनाक अनुभव के बावजूद वे प्रसन्न बदन और पूरे उत्साह और जोश के साथ अपनी ड्यूटी पर हाजिर हो गए।

इस प्रकार सार्जेंट श्याम बिहारी गुप्ता ने साहस, पहलशक्ति और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

26. 1370413 लांस नायक सोमशेखरन थाम्बी, इंजीनियर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 19 जनवरी, 1984)

लांस नायक सोमशेखरन थाम्बी तृतीय भारतीय अंटार्कटिक अभियान का एक स्थायी केन्द्र स्थापित करने वाले सदस्यों में से एक थे। 19 जनवरी 1984, को एक बर्फानी तूफान आया जिसके साथ काफी बर्फ आ रही थी, जिसके कारण बहुत कम दिखने लगा था और तापमान शून्य से 22 डिग्री नीचे चला गया। उस समय स्टेशन की दूसरी मंजिल की छत पर चद्दरें चढ़ाने का काम चल रहा था। लांस नायक सोमशेखरन थाम्बी ने महसूस किया कि उस निर्माण कार्य को जल्दी पूरा करना जरूरी होगा। इसलिए वे उस ढलवां छत पर चढ़ने के लिए स्वयं तैयार हो गए ताकि चद्दरें चढ़ाने का काम जारी रखा जा सके। हवा में उड़ जाने के खतरे से बचने के लिए अपने आपको रस्सी से बांधकर ढलवीं छत लटकते हुए खड़े रहकर उन्होंने बड़े साहस से लगभग 8 घण्टे तक काम करके वह कार्य पूरा कर दिखाया। इस प्रकार उस बहुत खतनराक काम को उन्होंने अकेले ही पूरा किया।

इस कार्रवाई में लांस नायक सोमशेखरन थाम्बी ने उत्कृष्ट साहस पहलशक्ति, धैर्य उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

27. 14526234 सिगनलमैन महेन्द्र कुमार शर्मा, (मरणोपरान्त)
सिगल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 27 जनवरी, 1984)

27 जनवरी 1984 को सिगनलमैन महेन्द्र कुमार शर्मा बिहार राज्यपथ परिवहन की एक बस से जहानाबाद से किंजर जा गया जिले में है, छुट्टी पर जा रहे थे। उस बस में उनके अलावा 40 और यात्री थे जिनमें 16 विद्यार्थी भी थे जो जहानाबाद में गणतन्त्र दिवस समारोह में भाग लेकर लौट रहे थे। उस बस को लगभग एक दर्जन सशस्त्र डकैतों ने अचानक रोक लिया और यात्रियों को लूटने लगे। सिगनलमैन महेन्द्रकुमार शर्मा ने यात्रियों को डाकुओं का विरोध करने और उनके आगे हिम्मत न हारने के लिए ललकारा। उन्होंने देखा कि बाकी यात्री उनका विरोध नहीं कर रहे। तब यात्रियों ने उनका विरोध करने के लिए खुद अपना उदाहरण पेश करते हुए उन्होंने एक डकैत पर प्रहार किया। जब डकैतों ने उन्हें अपना सामान बस से नीचे उतारने को कहा तो उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया और बहादुरी से लड़ते रहे, हालांकि उन्हें बहुत सारे डकैतों का अकेले ही मुकाबला करना पड़ा। एक डकैत ने काफी नजदीक से उन पर गोली चला दी जिससे उनकी तत्काल मृत्यु हो गयी। उनके द्वारा किए गए विरोध के फलस्वरूप विद्यार्थियों सहित बहुत से यात्रियों की जान बची।

इस कार्यवाही में सिगनलमैन महेन्द्र कुमार शर्मा ने साहस, पहलशक्ति, अभय और उच्चकोटि की जन-हित की भावना का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान दे दिया।

28. मेजर गुरमुख सिंह ढिल्लों (आई० सी०–25150), आर्टिलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 10 फरवरी, 1984)

10 फरवरी, 1984, को पुंछ शहर में भयंकर आग लग गयी जिससे कुछ महत्वपूर्ण कार्यालय आग की चपेट में आ गए। साथ में ही स्थित 52 माउंटेन रेजिमेंट के कार्मिक अग्निशमन उपकरण लेकर घटनास्थल की ओर दौड़े और आग बुझाना शुरू कर दिया। मेजर गुरमुख सिंह ढिल्लो सबसे पहले वहां पहुंचे। वह रेजिमेंट के 6 कार्मिकों सहित आग की चपेट में आई इमारतों में से एक की टीन की छत पर चढ़ गए। उन्होंने व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पूरे 2½ घण्टे तक आग पर नियंत्रण पाने की जी-तोड़ कोशिश की और अंततः आग को बढ़ने से रोकने में सफल हो गए।

इस कार्रवाई में मेजर गरमुख सिंह ढिल्लों ने साहस, नेतृत्व, पहलशक्ति संगठन क्षमता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

29. कैप्टन राकेश चन्द्र कुकरेती (आई० सी०–32178), राजपूत
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 13 फरवरी, 1984)

13/14 फरवरी, 1984, की रात को यह सूचना मिलने पर कि एक महत्वपूर्ण भूमिगत नागा नेता भारी शस्त्रों से लैस अपने साथियों के साथ गांव शनवी में ठहरा हुआ था, कैप्टन कुकरेती को उस गांव को घेरने और वहां तलाशी लेने का काम सौंपा गया। उन्होंने बड़ी सूझ-बूझ के साथ उन सभी स्थानों पर अपने सैनिक तैनात कर दिए जहां से भूमिगत नागाओं के बच निकलने की संभावना थी। उसके बाद उन्होंने स्वयं घर-घर की तलाशी ली जिसमें चार भूमिगत नागा पकड़े गए और उनसे बहुत बड़ी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद, नकद धन और अपराध से सम्बन्धित महत्वपूर्ण कागजात बरामद हुए।

इस प्रकार कैप्टन राकेश चन्द्र कुकरेती ने नेतृत्व, संगठन क्षमता, साहस और उच्चकोटी की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

30. श्री मुन्शी लाल वर्मा,
सहायक कोषाधिकारी
प्रधान डाकघर,
अलीगढ़।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 21 फरवरी, 1984)

21 फरवरी 1984, को लगभग 7 बजे शाम अलीगढ़ प्रधान डाक के सहायक कोषाधिकारी मुन्शीलाल वर्मा, केयर टेकर श्री जयराम के साथ पास

की एक इमारत से एक नकदी भरा बक्सा अलीगढ़ डाकघर के मुख्य राजकोष कार्यालय को ले जा रहे थे। बिजली बन्द होने के कारण उस इलाके में अंधेरा छाया हुआ था। नकदी वाला बक्सा श्री जयराम के सिर पर लदा हुआ था और श्री वर्मा उनके पीछे पेट्रोमैक्स जलाए चल रहे थे। उस इमारत के दरवाजे पर पहुंचते ही दो लुटेरों ने बक्से को छीनने की कोशिश की। उसमें नकद 2,22 291.40 रुपए भरा था। श्री जयराम ने उन्हें बक्सा छीनने से रोका और उसे मजबूती से पकड़े रहे इस पर उन में से एक ने पिस्तौल से उनकी छाती पर गोली चलाई जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। दूसरे ने बक्सा उठाकर भागने की कोशिश की। श्री मुन्शीलाल वर्मा ने बचाव का दूसरा रास्ता न देख पेट्रोमैक्स से ही उस पर वार किया, परन्तु लुटेरे बढ़ते-बढ़ते पास में खड़े किए हुए अपने स्कूटर तक पहुंच गए। वहां उनका तीसरा साथी जो उन्हें ले जाने के लिए तैयार था, स्कूटर चालू करने लगा। इत्तिफाक से स्कूटर नीचे गिर गया और वे तीनों उसके नीचे दब गए। स्थिति का लाभ उठा कर श्री वर्मा ने पेट्रोमैक्स से कई बार उन पर वार किए, नकदी वाल बक्सा छीना और वापिस अपने प्रधान कार्यालय में चले गए।

हताहत श्री जयराम को अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

इस प्रकार श्री मुन्शी राम वर्मा ने असाधारण साहस, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

31. विंग कमांडर गजानन दामोदर शिल्रे (10089), उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 29 फरवरी, 1984)

29 फरवरी 1984, को विंग कमांडर गजानन दामोदर शिल्रे को फ्लाइट लेफ्टिनेंट पी० वी० चौधरी के साथ सामान्य अभ्यास सार्टी के लिए भेजा गया। विमान में कुछ गम्भीर खराबी होने की सूचना पाकर विंग कमांडर शिल्रे ने फौरन विमान के कैप्टन के रूप में नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। स्थिति का जायजा लेते हुए उन्होंने पाया कि वे 3700 फुट की ऊंचाई पर थे।

उनके पास दो ही रास्ते थे विमान को छोड़ देना या फोर्स लैंडिंग आजमाना। उन्होंने विमान को त्यागने की बजाय फोर्स लैण्ड करने का वीरोचित फैसला किया। हालांकि उनके इस निर्णय से उन्हें और उनके कार्मियों को संगीन चोटें लगने का खतरा था। बाद में अपने सम्पूर्ण अनुभव और कौशल के बल पर उन्होंने एक बेहद नाजुक स्थिति में विमान को मामूली के नुकसान के साथ पूरी तरह सही फोर्स लैंडिंग की।

इस प्रकार विंग कमांडर जानन दामोदर शिल्रे ने उत्कृष्ट साहस, व्यावसायिक कुशलता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

32. श्री हुइनिंगशुमबम नाबाचन्द्र सिंह,

मणिपुर राज्य में एक पेट्रोल पम्प के कर्मचारी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 15 मई 1984)

15 मई 1984, को मणिपुर राज्य में एक पेट्रोल पम्प के कर्मचारी श्री हुइनिंगशम नाबा चन्द्र सिंह पेट्रोल पम्प के अन्दर काउंटर में पेट्रोल पम्प की दिनभर की बिक्री की रकम गिन रहे थे। तभी हथियारों से लैस दो उग्रवादी रिवाल्वर और हथगोला लिए काउंटर के अन्दर घुस आए और बिक्री की सारी रकम छीन ली। रुपया छीनने के बाद उनमें से एक उग्रवादी पहरेदार के रूप में काउंटर पर खड़ा रहा और दूसरा और रुपयों की खोज में अन्दर के कमरे में चला गया। उस पर श्री नाबाचन्द्र सिंह ने बहुत साहस से काम लेते हुए उस उग्रवादी को दबोच लिया। उसी बीच श्री साइमन जोजो जो काउंटर के भीतर थे उससे भिड़ गए और गोलियों से भरी रिवाल्वर उससे छीन ली। उसके बाद उस उग्रवादी ने एक प्राणघातक हमले के रूप में हथगोले को काउंटर के अन्दर फैंकने की कोशिश की परन्तु श्री नाबाचन्द्र सिंह ने उससे हथगोला भी छीन लिया। अन्त में उग्रवादी पर काबू पा कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उस मुठभेड़ के दौरान बाहर खड़ा दूसरा उग्रवादी बच निकलने में सफल हो गया।

इस प्रकार श्री हुइनिंगशमबम नाबाचन्द्र सिंह ने उत्कृष्ट साहस, शौर्य, धैर्य और उच्चकोटि की जन हित की भावना का परिचय दिया।

33. श्री साइमन जोजो,

मणिपुर में एक पेट्रोलपम्प के कर्मचारी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 15 मई 1984)

15 मई, 1984 को मणिपुर राज्य में एक पेट्रोल पम्प के कर्मचारी हुइनिंगशमबम नाबाचन्द्र सिंह पेट्रोल पम्प के अन्दर के काउण्टर में पेट्रोल पम्प की दिन भर की बिक्री की रकम गिन रहे थे। तभी हथियारों से लैस दो युवा उग्रवादी रिवाल्वर और हथगोला लिए काउण्टर के अन्दर घुस आए और बिक्री की सारी रकम छीन ली। उसके बाद उनमें से एक उग्रवादी पहरेदार के रूप में काउण्टर पर खड़ा रहा और दूसरा और रुपयों की खोज में अन्दर के कमरे में चला गया। उस पर श्री नाबाचन्द्र सिंह ने बहुत साहस से काम लेते हुए उस उग्रवादी को दबोच लिया। श्री साइमन जोजो ने जो पहले से ही काउण्टर के भीतर थे काउण्टर का दरवाजा तुरन्त बन्द कर दिया जिससे दूसरा उग्रवादी अन्दर बन्द हो गया। तब उन्होंने श्री नाबाचन्द्र सिंह का साथ दिया और उस उग्रवादी के सिर पर लाठी से प्रहार किया और गोलियों से भरी रिवाल्वर उससे छीन ली। उसके बाद उग्रवादी ने प्राणघातक हमले के रूप में हथगोले को काउण्टर के अन्दर फैंकने की कोशिश की परन्तु श्री नाबाचन्द्र सिंह ने उससे हथगोला भी छीन लिया। अन्त में उग्रवादी को काबू कर गिरफ्तार कर लिया गया। उस मुठभेड़ के दौरान बाहर खड़ा दूसरा उग्रवादी बच निकलने में सफल हो गया।

इस कार्यवाही में श्री साइमन जोजो ने साहस, धैर्य और उच्चकोटि की जन-हित की भावना का परिचय दिया।

34. स्क्वाड्रन लीडर सुरेश हरीभाव आप्टे (9735), सेवा निवृत्त उड़ान (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 18 मई, 1984)

स्क्वाड्रन लीडर सुरेश हरीभाव आप्टे नवम्बर 1976, से एच० ए० एल० बंगलौर काम्प्लेक्स में परीक्षण उड़ान ड्यूटियों पर सेवारत रहे हैं। 18 मई, 1984, को स्क्वाड्रन लीडर आप्टे को ईंधन सप्लाई में कठिनाई के कारण अपने एच० पी० टी० प्रोटोटाइप विमान का इंजन खराब होने का आभास हुआ। 1000 फुट की ऊंचाई पर थे जहां एयर फील्ड पर फोर्स लैंडिंग करना कोई आसान काम नहीं था। फिर भी, भारी कौशल और धैर्यपूर्ण साहस के साथ 50 फुट की ऊंचाई से फाइनल की ओर 90° का मोड़ लेकर वे हवाई पथ पर बेदाग उतर गए।

इस प्रकार स्क्वाड्रन लीडर सुरेश हरीभाव आप्टे ने साहस, वृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

35. कैप्टन हरीशजीत सिंह (आई० सी०-30216), आर्मी सर्विस कोर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 18 मई 1984)

कैप्टन हरीशजीत सिंह ने अभी हाल ही में माइक्रोलाइट विमान से कश्मीर से कन्याकुमारी तक की साहसिक यात्रा की। यह अभियान 7 अप्रैल, 1984 को श्रीनगर से प्रारम्भ हुआ। 9 अप्रैल, को खराब मौसम के बावजूद वह बनिहाल दर्रे की पीर पंजाल पहाड़ियों को पार करने में सफल हुए। 10 अप्रैल, को उन्होंने बनिहाल दर्रे से फिर उड़ान भरी और ऊधमपुर के लिए रवाना हो गए। उस रोज मौसम बेहद खराब था और उनकी मशीन पेंडुलम की तरह झूलने लगी। उस दौरान विमान में उनकी सीट अपनी जगह से हट गयी और वे अपनी सुरक्षा-पेटी से लटक गए। परीक्षा की उन घड़ियों में कैप्टन हरीशजीत सिंह ने साहस नहीं छोड़ा और पाटनी चोटी पार कर सुरक्षित ऊधमपुर उतर गए।

अब तक की यात्रा के खतरनाक अनुभवों के बावजूद उन्हें ईंधन की कमी के कारण मजबूरन जालन्धर से थोड़ी दूरी पर एक खेत में उतरना पड़ा। यहां से उड़ान भरते समय उनके विमान का अगला हिस्सा खेत में धंस गया, जिससे विमान को भी क्षति पहुंची और उन्हें भी हल्की चोटें आईं।

16 मई 1984, को तिरुनवेल्ली से उड़ान भरने के बाद उन्होंने पाया कि उनकी मशीन का संतुलन बिगड़ रहा था और एक स्वाकिंग प्लग सर्किट से निकलकर हवा में झूल रहा था। अनेक बाधाओं के बावजूद उन्होंने फिर यात्रा

शुरू कर दी और 18 मई, 1984, को कन्याकुमारी उतर गए। हमारे देश में यह अपनी तरह का पहला अभियान था, जिसमे पीर पंजाल पर्वत मालाओं और भारत के मैदानी भागों के ऊपर उड़ान भरी गई, वह भी मानसून से ऐन पहले के खतरनाक मौसम में. जब मौसम के बारे मे किसी प्रकार का अंदाजा लगाना मुश्किल होता है। उन्होने 42 दिनों में अपना मिशन पूरा किया और उस दौरान 4170 मील की दूरी तय की।

घायल होने के बावजूद उन्होने अपना मिशन चाल रखा। कैप्टन हरीशजीत सिह का यह अभियान अपने आप में साहस, पहल-शक्ति, धैर्य और पक्के इरादों की कहानी है, जिससे देश में इस तरह की गतिविधियों को बढ़ावा देने में बल मिलेगा।

36. ग्रुप कैप्टन कृष्ण कुमार सांगर, वी० एम० (7017), उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 3 जून 1984)

ग्रुप कैप्टन कृष्ण कुमार सांगर ने अक्तूबर, 1981 से एक हेलिकाप्टर यूनिट की कमान संभाली हुई है। उत्तरी क्षेत्र के किसी स्थान पर संक्रिया अभ्यास के दौरान उन्हे एम० आई०—8 टास्क फोर्स कमांडर नियुक्त किया गया था।

बहुत-सा ऐसा सामान जिसे पहले कभी हवाई जहाज से नही ले जाया गया था, हैलिकाप्टरों से वहां गिराना था। बडे ही खराब मौसम और बर्फ से ढके बीहड़ इलाके मे ये संक्रियाएं की जानी थी। इस कार्रवाई के दौरान ग्रुप कैप्टन सांगर को बहुत से काम पहली बार कर गुजरने का श्रेय प्राप्त हुआ और वह 17,000 फुट से भी अधिक उंचाई के ठिकानो पर राशन तथा अन्य सामान गिराने में सफल हुए। 3 जून, 1984, को एक पातन क्षेत्र में आर्कटिक हट" को बिना क्षति पहुचाए उतारने के लिए उन्हें अपने विमान को अधिकतम सीमा तक ले जाना पड़ा और यह उनकी व्यावसायिक निपुणता तथा अपने विमान की घनिष्ट जानकारी के कारण ही संभव हो सका।

इस प्रकार ग्रुप कैप्टन कृष्ण कुमार सागर ने साहस, व्यावसायिक कुशलता दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

37. 4261740 सिपाही दीप नारायण सिह, (मरणोपरान्त) बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 4 जून 1984)

4 जून 1984, को सिपाही दीप नारायण सिह एक लाइट मशीनगन पोस्ट पर तैनात किए गए थे। उसी दिन लगभग 04.50 बजे आतकवादियो ने एक इमारत से भारी गोली बारी शुरू कर दी। इमारत की मजबूती से किलेबन्दी की हुई थी और आतकवादी वहा मोर्चे पर जमे हुए थे। सिपाही दीप नारायण सिह लाइट मशीनगन पोस्ट पर लगातार पूरे 17 घण्टे डटे रहे और दिनभर जवाबी गोलीबारी करते रहे। आतंकवादियों की कारगर गोलीबारी के कारण दिन में उनकी जगह दूसरे सिपाही को भेजना संभव नही था। उन्होने अगले दिन भी उस पोस्ट पर दुबारा जाने की इच्छा व्यक्त की और वहां से आतंकवादियों के सात-आठ मोर्चों पर गोलीबारी करते रहे। वह इतनी कारगरता से गोलीबारी कर रहे थे कि वहां मोर्चा संभाले हुए सभी आतंकवादियों का हौसला पस्त हो गया और वे सभी उन पर गोलीबारी करने लगे। 5 जून, 1984, को आतंकवादियों की मशीनगन की गोलियो की बौछार उनके माथे पर लगी, जिससे उनके सिर मे गम्भीर चोटे आई और वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस पूरी सक्रिया के दौरान सिपाही दीप नारायण सिह ने दृढ़ संकल्प, साहस, अनुकरणीय वैयक्तिक शौर्य तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया और सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी।

38. मेजर बलदेव राज भाटिया (आई० सी०—21857), गार्डस।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 10 गार्डस को एक इमारत से आतकवादियों को निकालने का काम सौपा गया। मेजर बलदेव राज भाटिया के नेतृत्व मे "ए" कम्पनी को इमारत के बाएं भाग से आतंकवादियों को निकालने का काम सौपा गया। यह प्लाटून इमारत में गई ही थी कि इस पर स्वचालित हथियारो से चारों ओर से गोलीबारी शुरू हो गयी। आतंकवादियों ने दरवाजों, खिड़कियों और रोशनदानों से हथगोले भी फैंके। आतंकवादियों की गोलीबारी से विचलित हुए बिना और अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए मेजर बलदेव राज भाटिया अपनी टुकड़ी में सब से आगे बढ़ गए और संक्रिया की गति को बनाए रखने के लिए स्वयं उनका नेतृत्व किया और अन्ततः सौंपे गए कार्य को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया।

इस कार्रवाई में मेजर बलदेव राज भाटिया ने उत्कृष्ट शौर्य दृढ़ संकल्प, धैर्य उच्चतम नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

39 मेजर प्रकाश चन्द कटोच (आई० सी०—24006), पैराशूट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, को रात जब मेजर प्रकाश चन्द कटोच एक इमारत के मुख्य प्रवेश द्वार से टीम ग्रुप का नेतृत्व कर रहे थे उसी समय आतंकवादियों ने अजेय और अभेद्य मशीनगन पोस्ट से उन पर लाइट मशीनगन से भारी गोलीबारी की। पहले इन पर स्टेन मशीन कारबाइन का फायर हुआ, जिसकी गोली को उन्होंने अपनी गोली सह जाकेट पर झेल लिया; लेकिन तुरन्त जवाबी कार्रवाई कर तेजी से फायर शुरू कर दिया जिससे एक आतंकवादी मारा गया और उनके सैनिक भी हताहत होने से बच गए।

भारी विषमताओं के बावजूद उनकी टुकड़ी ने एक अभेद्य फायर लाइन पर पहला आक्रमण शुरू किया। इस कार्रवाई में उनके दाएं कंधे में मशीनगन की गोली लगी; लेकिन फिर भी उससे विचलित हुए बिना वे साहसपूर्वक आगे बढ़ते रहे और अपने लक्ष्य पर पहुंचने में सफल हो गए।

इस कार्रवाई में मेजर प्रकाश चन्द कटोच ने शौर्य साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

40. कैप्टन कृष्ण श्रीकर प्रभु (आई० सी०—32823), मराठा लाइट इन्फैण्ट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात कैप्टन कृष्ण श्रीकर प्रभु उस कम्पनी ग्रुप के सैकिड-इन-कमान थे, जिसे आतंकवादियों के विरुद्ध कार्रवाई करने का काम सौंपा गया था। उसका काम इमारत परिसर से उग्र आतंकवादियों को बाहर निकालना था। कैप्टन कृष्ण श्रीकर प्रभु को इमारत के मुख्य द्वार पर कब्जा करने का काम सौपा गया जिसमें ऊपर के हिस्से में आतंकवादियों ने घातक शस्त्र जमा किए हुए थे। इसके अलावा तोपों से लैस उस स्थान की ओर बढ़ने का अर्थ था आतंकवादियों की गोलीबारी की जद के सामने से होकर निकलना।

इन सब कठिनाइयों के बावजूद कैप्टन कृष्ण श्रीकर प्रभु शस्त्रागार के साथ लगी ऊंची दीवारों पर बड़ी तेजी के साथ चढ गए और आतंकवादियों की कारगर गोलीबारी के बावजूद अपने सैनिकों को द्वार के ऊपर चढ़ा दिया और फिर जोरदार धावा बोलकर तोपों के मोर्चे को ध्वस्त कर दिया। उसी समय पास की इमारत से आतंकवादियों ने उन पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होने उस ओर फायर करके उस गोलीबारी को भी निष्क्रिय कर दिया। इसमें एक आतंकवादी घायल हुआ और एक शाट गन बरामद हुई। बाद में तलाशी की कार्रवाई के दौरान उन्होने आतंकवादियों, को दो राइफलों, 12 बोर की दो बन्दूकों और 100 राउण्ड गोली-बारूद को कब्जे में कर लिया।

इस प्रकार कैप्टन कृष्ण श्रीकर प्रभु ने साहस, अद्भुत पहलशक्ति, दृढ़ संकल्प, अनुकरणीय वैयक्तिक शौर्य और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

41. लेफ्टिनेंट तारा चन्द (आई० सी०—40046), राजपूत।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

आतंकवादी विरोधी संक्रिया के दौरान लेफ्टिनेंट ताराचन्द 2 राजपूत की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। 5/6 जून 1984, को रात उनकी प्लाटून का एक इमारत के परिसर से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया। उनकी प्लाटून इमारत के पास पहुंचने ही वाली थी कि आतंकवादियों ने एक कमरे से भारी और अचूक गोलीबारी शुरू कर दी जिससे इनका आगे बढ़ना

रुक गया। उसमें लेफ्टिनेंट पाराचन्द जो प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे, की दाईं टांग में गोली लग गयी। जख्मी होने के बावजूद वे रेंग-रेंग कर एक कोने से आगे बढ़े और उन आतंकवादियों को मार डाला जो उनकी प्लाटून को आगे बढ़ने से रोके हुए थे। उससे उनकी प्लाटून आगे बढ़ने और अपना कार्य पूरा करने में सफल हुई।

इस कार्रवाई में लेफ्टिनेंट तारा चन्द ने साहस, पहल-शक्ति, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

42. जे० सी० 90455 सूबेदार बादल घोष, राजपूत।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

आतंकवादी-विरोधी संक्रिया के दौरान 2 राजपूत के सूबेदार बादल घोष एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। 5/6 जून, 1984, की रात उनकी प्लाटून को एकाएक इमारत परिसर में आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। इमारत की भारी किलेबन्दी की हुई थी और उस पर आतंकवादियों ने मजबूती से कब्जा किया हुआ था। जैसे ही उनकी प्लाटून के इमारत के अहाते में पहुंची आतंकवादियों ने भारी और कारगर गोलीबारी शुरू कर दी जिससे उनकी प्लाटून का आगे बढ़ना रुक गया। ऐसी स्थिति में अपने जीवन की बिल्कुल परवाह न करते हुए सूबेदार बादल घोष ने सैनिकों की एक सैक्शन के साथ इमारत पर धावा बोल दिया जिससे दो आतंकवादी मारे गए और तीन अन्य को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर होना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने सौंपे गए काम को सफलतापूर्वक पूरा कर दिखाया।

इस कार्रवाई में सूबेदार बादल घोष ने उत्कृष्ट शौर्य, साहस, दृढ़ संकल्प, अनुकरणीय नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

43. 4150739 नायब सूबेदार नयन सिंह, कुमाऊं। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात आतंकवादियों के विरुद्ध की गयी संक्रिया के दौरान 9 कुमाऊं "सी" "सी" कम्पनी को एक बड़ी निर्माणाधीन इमारत की दूसरी मंजिल पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। ऊपर चढ़ने के लिए केवल एक ही जीना था जो इमारत के बीचोबीच था और वहीं से होकर सभी कमरों में जाया जा सकता था। अपने लक्ष्य पर पहुंचने के लिए कम्पनी इसी जीने का इस्तेमाल करने के लिए बाध्य थी। नायब सूबेदार नयन सिंह अपनी प्लाटून को सीढ़ियों से ऊपर ले ही जा रहे थे कि आतंकवादियों ने उन पर स्वचालित हथियारों से कारगर गोलीबारी शुरू कर दी। अपनी जान की परवाह किए बिना नायब सूबेदार नयन सिंह ने आतंकवादियों के मोर्चे पर हथगोला फैंका और अपनी कारबाइन से गोलियां चलाते हुए सीढ़ियों पर धावा बोल दिया। हथगोला फैंकने के बावजूद एक आतंकवादी जीवित बच गया था और उसने नायब सूबेदार नयन सिंह पर गोली चलाई जिससे वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार नायब सूबेदार नयन सिंह ने उत्कृष्ट शौर्य, उच्च पहल-शक्ति, दृढ़ संकल्प, साहस, नेतृत्व तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया और सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

44. 13664504 नायब सूबेदार हरनाम सिंह, गार्डस।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 10 गार्डस की "ए" कम्पनी को एक महत्वपूर्ण इमारत के मुख्य प्रवेश द्वार के बाएं हिस्से से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। इन इमारतों की भारी किलाबंदी की हुई थी और आतंकवादियों ने बड़ी मजबूती से कब्जा किया हुआ। नायब सूबेदार हरनाम सिंह प्लाटून कमांडर थे। इमारत के परिसर में प्रवेश करते ही उनकी प्लाटून पर आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों और हथगोलों से भारी और अचूक गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने तुरन्त उस प्लाटून के साथ भेजी गई मीडियम मशीनगन टुकड़ी को गोलीबारी करने पर लगाया और इस गोलीबारी की सुरक्षा में अपनी प्लाटून का स्वयं नेतृत्व करते हुए आगे बढ़े। कुछ ही देर में इस मीडियम मशीनगन टुकड़ी पर आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से कारगर गोलीबारी शुरू कर दी। अब उनकी टुकड़ी बिना किसी सुरक्षा फायर के लड़ रही थी। लेकिन नायब सूबेदार हरनाम सिंह ने बहुत संयम से काम लिया और अपनी प्लाटून को सफलतापूर्वक लक्ष्य की ओर बढ़ाया।

इस प्रकार नायब सूबेदार हरनाम सिंह ने धैर्य, साहस, दृढ़ संकल्प, अनुकरणीय शौर्य, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

45. 13667576 नायब सूबेदार सलेट सिंह, गार्डस।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून, की "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 10 गार्डस को महत्वपूर्ण इमारत के परिसर से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। नायब सूबेदार सलेट सिंह प्लाटून कमांडर थे। उन्हें इमारत के मुख्य प्रवेश द्वार के बाएं हिस्से से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम दिया गया था। जैसे ही उनकी प्लाटून प्रवेश द्वार पर पहुंची आतंकवादियों ने इमारत के अन्दर जगह-जगह से तथा छत के ऊपर से स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी। जैसे ही उन्होंने इस प्लाटून के साथ भेजी गयी मीडियम मशीनगन टुकड़ी को फायर पर लगाया आतंकवादियों ने सामने से अचूक गोलीबारी शुरू कर दी और कमरों से हथगोले फैंके, जिससे प्लाटून का आगे बढ़ना बहुत कठिन हो गया। नायब सूबेदार सलेट सिंह ने तब भी धैर्य नहीं खोया और अपनी जान की बाजी लगा कर आतंकवादियों की भीषण गोलीबारी से बीच एक अन्य सेक्शन को लेकर आगे बढ़े। इमारत की बगल में पहुंचते ही उन्होंने अपनी राकेट छोड़ने वाली टुकड़ी को राकेट छोड़ने का आदेश दिया ताकि आतंकवादियों की उस गन पोस्ट को नष्ट किया जा सके। अन्ततः उस फायर को शांत करने में सफल हो गए। लेकिन इसी बीच आतंकवादियों ने एक कमरे से उसके ऊपर हथगोला फैंका जिससे उनका बायां बाजू बुरी तरह जख्मी हो गया। फिर भी जख्म की परवाह किए बिना और जान की बाजी लगा कर उन्होंने स्वयं अपनी एक सैक्शन का नेतृत्व किया और जिस कमरे से फायर हो रहा था वहां से आतंकवादियों को खदेड़ दिया जिसमें दो आतंकवादी मारे गए और हथगोलों का एक बक्सा भी कब्जे में ले लिया गया।

इस प्रकार नायब सूबेदार सलेट सिंह ने उत्कृष्ट शौर्य, साहस, पहल-शक्ति, नेतृत्व, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

46. 2970429 हवलदार अतुल कुमार मण्डल, राजपूत।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

आतंकवादियों के विरुद्ध की गयी कार्रवाई के दौरान 2 राजपूत के हवलदार अतुल कुमार मण्डल मुख्य प्लाटून की एक सैक्शन की कमान कर रहे थे। 5/6 जून, 1984, की रात उनकी सैक्शन को एक इमारत की तलाशी लेने का काम सौंपा गया था जहां आतंकवादियों का कब्जा होने का संदेह था। जैसे ही हवलदार अतुल कुमार मण्डल पहले कमरे के पास पहुंचे, अन्दर से उन पर गोली चलाई गई जो उनके चेहरे पर लगी। अपने जख्म और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्होंने उस कमरे पर धावा बोल दिया और गोलीबारी करने वाले आतंकवादी को मार गिराया जिससे उनकी सैक्शन आतंकवादियों का सफाया करने का काम आगे जारी रख सकी।

इस प्रकार हवलदार अतुल कुमार मण्डल ने पहलशक्ति, उत्कृष्ट साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

47. 4158937 हवलदार भूपाल सिंह, कुमाऊं रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान "डी" कम्पनी को एक महत्वपूर्ण इमारत पर कब्जा करने को कहा गया। कम्पनी कमांडर मेजर यू० के० दुबे ने अपनी प्लाटून को आदेश दिया कि प्रवेश द्वार की ओर फायर कर रही मीडियम मशीनगन को शान्त कर दिया जाए क्योंकि उससे अपने सैनिक बुरी तरह हताहत हो रहे थे। हवलदार भूपाल सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बिना अपने अन्य साथियों के साथ उस मशीनगन पर सीधे धावा बोल दिया। इसी बीच उन्हें मीडियम मशीनगन की गोली लगी और जमीन पर गिर गए। मीडियम मशीनगन से अभी भी गोलियां चलाई जा रही थी इसलिए वे उस इमारत के मुख्य प्रवेश द्वार की सीढ़ियों तक रेंग-रेंग कर पहुंचे और तुरंत

उस मीडियम मशीनगन पोजीशन पर ग्रेनेड फैंककर उसे शान्त कर दिया । इस कार्रवाई में उन्होंने अकेले ही पांच आतंकवादियों को मार गिराया तथा मुख्य प्रवेश द्वार पर अधिकार कर लिया ।

इस कार्रवाई मे हवलदार भूपाल सिंह ने असाधारण शौर्य, साहस, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

48 4048545 हवलदार बेतार सिंह मनराल, (मरणोपरान्त)
गढ़वाल राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 9 गढ़वाल राइफल्स को एक इमारत से आतंकवादियों को निकालने का काम सौंपा गया था । हवलदार बेताल सिंह मनराल भले ही निम्न चिकित्सा श्रेणी के गैर-कमीशन अफसर थे, लेकिन उन्होंने अपनी सेक्शन का नेतृत्व करने और इस संक्रिया में भाग लेने का आग्रह किया । लक्ष्य पर पहुंचते ही कम्पनी कमांडर ने हवलदार बेताल सिंह मनराल से कहा कि वे बाईं ओर से अपनी सेक्शन के साथ आगे बढ़ें और उन आतंकवादियों का सफाया करें जो उस कम्पनी को आगे बढ़ने से रोक रहे थे । खतरे की परवाह किए बिना हवलदार बेताल सिंह मनराल ने अपनी सेक्शन के साथ उस सीढ़ी पर धावा बोल दिया जो उस इमारत के अन्दर जाने का एक मात्र रास्ता था । इस कार्रवाई में उनका एक सिपाही मारा गया और वे स्वयं भी घायल हो गए । घाव की परवाह किए बिना अपनी कारबाइन से फायर करते हुए उन्होंने आतंकवादियों की उस मशीनगन पोस्ट पर हमला किया और उसे शान्त कर दिया । इसी बीच एक स्वचालित हथियार की गोली उन्हें दुबारा लगी और वे घटनास्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए । उनकी इस कार्यवाही से प्लाटून को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में बहुत सहायता मिली ।

इस प्रकार हवलदार बेताल सिंह मनराल ने उत्कृष्ट शौर्य, अद्भुत पहल-शक्ति, साहस, दृढ़ संकल्प, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

49 13668128 हवलदार हेतराम,
गार्डस ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून, 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 10 गार्डस की "बी" कम्पनी को एक महत्वपूर्ण इमारत के उत्तरी खण्ड से आतंकवादियों को निकालने का काम सौंपा गया था । इमारत के परिसर की भारी किलेबन्दी की हुई थी और उस पर उग्र आतंकवादियों ने मजबूती से कब्जा किया हुआ था । आगे की टुकड़ी के सेक्शन कमांडर हवलदार हेतराम अपने सेक्शन के पहले दो जवानों के एक-दम पीछे थे । पहले दो कमरे खाली करा लेने के बाद ज्योंही हवलदार हेतराम तीसरे कमरे की तरफ बढ़े, एक-दम उनकी कम्पनी पर भीषण गोलीबारी हुई जिससे वे घायल हो गए । लेकिन अपने घाव की परवाह किए बिना वे तेजी से तीसरे कमरे की ओर बढ़े और दरवाजा तोड़कर एक हथगोला अन्दर फैंका । हथगोला फैंकते समय उन्हें दूसरी गोली लगी और अपनी कारबाइन से कमरे के भीतर के चारों का आतंकवादियों को मार गिराया ।

इस कार्रवाई में हवलदार हेतराम ने उत्कृष्ट शौर्य, महत्वशक्ति, साहस, दृढ़ संकल्प, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

50 13668231 हवलदार हरमिन्दर सिंह,
गार्डस ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 10 गार्डस की "बी" कम्पनी को एक महत्वपूर्ण इमारत की पहली और दूसरी मंजिल पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था । हवलदार हरमिन्दर सिंह की सेक्शन को पहली मंजिल के पहले कमरे पर कब्जा करने का काम सौंपा गया जिससे कि शेष प्लाटून को अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे बढ़ने में सहायता मिल सके । सीढ़ी पर ही उनकी सेक्शन के सबसे आगे बढ़ रहे दोनों जवान आतंकवादियों की स्वचालित फायर से घायल हो गए । हवलदार हरमिन्दर सिंह ने उच्च पहलशक्ति का परिचय देते हुए एल्यूमिनियम की सीढ़ी लगाकर खुद ही पहली मंजिल पर चढ़ने का फैसला किया । आतंकवादियों के भीषण और कारगर फायर के बावजूद वह बिजली के समान तेजी से ऊपर चढ़ गए । वे दृढ़ संकल्प के साथ और अपने जीवन की परवाह किए बिना वहां पांव जमाने में सफल हो गए ।

इस कारवाई मे हवलदार हरमिन्दर सिंह ने साहस, शौर्य, दृढ़ संकल्प, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

51. 2553714 लांस हवलदार कुप्पुस्वामी, (मरणोपरान्त)
मद्रास रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून, 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 6 मद्रास को एक इमारत से आतंकवादियों को निकालने काम सौंपा गया था । इस काम के लिए आगे की प्लाटूनों मे से लांस हवलदार कुप्पुस्वामी एक के सैक्शन कमांडर थे, जिन्हें इस इमारत की पहली मंजिल के एक कमरे में छिपे आतंकवादियों को बाहर निकालना था । इमारत पर पहुंचते ही आतंकवादियों ने उनकी सेक्शन पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी । उनकी सैक्शन सीढ़ियों से होकर दरवाजे की ओर बढ़ रही थी कि इतने में ही लांस हवलदार कुप्पुस्वामी के सीने में गोली लगी । इस घाव की परवाह न करते हुए और जान की बाजी लगाकर वे अपनी सेक्शन को कमरे तक ले जाने और एक आतंकवादी को मार गिराने तथा पांच अन्यों को पकड़ने में सफल हो गए । इस प्रकार उन्होंने सौंपे गए काम को सफलतापूर्वक पूरा कर दिखाया । बाद में सीने पर लगी गोली के कारण उनकी मृत्यु हो गयी ।

इस कारवाई में लांस हवलदार कुप्पुस्वामी ने उत्कृष्ट शौर्य, साहस, दृढ़ संकल्प, अनुकरणीय नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया और सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों का आहुति दे दी ।

52. 13608755 नायक गिरधारी लाल यादव, (मरणोपरान्त)
पैराशूट रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान टुकड़ी के सैक्शन कमांडर नायक गिरधारी लाल यादव को एक इमारत पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था । इमारत की भारी किलेबन्दी की हुई थी और उग्र आतंकवादियों ने उस पर मजबूती से कब्जा किया हुआ था । जब यह टुकड़ी इस इमारत में प्रवेश कर रही थी तो इस पर मशीनगनों से भारी गोलीबारी की गयी जिससे उनका आगे बढ़ना कठिन हो गया । नायक गिरधारी लाल यादव ने अपने सभी सैनिकों को प्रोत्साहित किया और स्वयं आगे बढ़कर उसका नेतृत्व करने लगे । इतने में मशीनगन की गोली उनके बाएं बाजू में पर लगी । इस घाव की परवाह किए बिना वे गन पोस्ट की ओर दौड़ पड़े और हथगोला फैंका तथा उसे शान्त करने में सफल हो गए । इस कारवाई के दौरान मशीनगन की एक और गोली उनके चेहरे पर लगी जिसके फलस्वरूप वह वीरगति को प्राप्त हो गए ।

इस कार्रवाई में नायक गिरधारी लाल यादव ने साहस, दृढ़ संकल्प, शौर्य, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

53. 2577937 नायक मधुसूदन पिल्ले के जी,
मद्रास रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 जून 1984)

"सी" कम्पनी 26 मद्रास के नायक मधुसूदन पिल्ले के० जी० को एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर मे तथा उसके आसपास आतंकवादियों के बचाव मार्चों का सफाया करने के काम पर लगाया गया था । 5/6 जून 1984, की रात "सी" कम्पनी का एक इमारत के दक्षिणी भाग से आतंकवादियों को बाहर निकालने काम सौंपा गया था । आगे की कम्पनी द्वारा उस इमारत के भूमिगत पर कब्जा करने के बाद इस कम्पनी का आगे कार्रवाई शुरू करना था परन्तु इस संक्रिया मे विलम्ब हो गया क्योंकि आतंकवादियों द्वारा गुम्बद में लगायी गयी लाइट मशीनगन से की जा रही भारी गोलाबारी के कारण इस कम्पनी का आगे बढ़ना रुक गया । इस विकट स्थिति मे नायक मधुसूदन पिल्ले के० जी० आगे की ओर

दौड़े और उन्होंने भीषण युद्ध के बाद जिसमें वे घायल हो गए, लाइट मशीनगन को शान्त करा दिया। इससे इनकी कम्पनी अपना लक्ष्य पूरा करने में सफल हो गई।

इस प्रकार नायक मधुसूदनन पिल्ले के० जा० ने उत्कृष्ट साहस, पहलशक्ति, शौर्य और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

54. 4168587 लांस नायक राम बहोर सिंह, (मरणोपरान्त)
कुमाऊं रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

लांस नायक राम बहोर सिंह, 15 कुमाऊं रेजिमेंट की "ए" कम्पनी की आगे की टुकड़ी के लाइट मशीन गनर न० 2 थे। 5/6 जून 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान मेजर बी० के० मिश्र के नेतृत्व में "ए" कम्पनी को एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। सभी ओर से मशीनगनों की भारी गोलीबारी के कारण कम्पनी का अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना रुक गया। इस स्थिति में मेजर बी० के० मिश्र ने आतंकवादियों के मोर्चे पर भीषण गोलीबारी शुरू कर दी। अचानक लांस नायक राम बहोर सिंह ने इमारत के तहखाने के रोशनदान से मशीनगन बैरल बाहर आती हुई देखी। इस बात का आभास पाकर कि उनके कम्पनी कमांडर का जीवन खतरे में है और उनकी टुकड़ी के कमांडर लांस नायक निर्भय सिंह भी घायल हो चुके थे, लांस नायक राम बहोर सिंह दौड़ कर अपने कम्पनी कमांडर से आगे हो गए और उन्हें आवश्यक सुरक्षा प्रदान की। इसी दौरान मशीनगन का गोली उनके माथे पर लगी जिससे वे तत्काल वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस कारवाई में लांस नायक राम बहोर सिंह ने उत्कृष्ट शौर्य, धैर्य और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

55. 13673724 लांस नायक मनरूप सिंह, (मरणोपरान्त)
ब्रिगेड आफ गार्ड्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान "डी" कंपनी को एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया। इस इमारत की भारी किलेबंदी की हुई थी और आतंकवादियों ने उसपर मजबूती से कब्जा किया हुआ था। लांस नायक मनरूप सिंह सबसे आगे वाली प्लाटून में थे। अपनी प्लाटून को आगे बढ़ने में सुरक्षा प्रदान करने के लिए उन्होंने तुरन्त इमारत के प्रवेश द्वार के खम्भे के पास मशीनगन साध ली। उनकी कंपनी का एक जवान कमरे के अन्दर घुस गया और गोलीबारी शुरू कर दी। इससे पहले कि प्लाटून के अन्य सैनिक कमरे में जा सके आतंकवादियों ने साथ के कमरे से एक हथगोला फैंका। इनके बाद लांस नायक मनरूप सिंह ने स्वयं लाइट मशीनगन सम्भाली। तीन आतंकवादियों को अपने हथियार छीनने के लिए बढ़ते हुए देखते ही उन्होंने बड़ी फुर्ती से आतंकवादियों पर गोलियां चलाकर सबको मार दिया। इस कार्रवाई में वे स्वयं भी घायल हो गए थे और एक आतंकवादी ने उन्हें छुरा भी घोंप दिया था। बुरी तरह घायल होने के बावजूद वे बहादुरी के साथ खम्भों के साथ-साथ आगे बढ़ते गए और चौथे कमरे में जाने में सफल हो गए। वहां पर फिर उन्होंने गोलीबारी की और तीन आतंकवादियों का कमरे में ही ढेर कर दिया। जैसे ही वे कमरे से बाहर आ रहे थे कि आतंकवादियों की स्वचालित राइफल की गोली उन्हें लगी और वे वहीं पर वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार लांस नायक मनरूप सिंह ने उत्कृष्ट शौर्य, धैर्य, महान सूझबूझ, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

56. 13677059 लांस नायक मेजर सिंह,
ब्रिगेड आफ गार्ड्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 10 गार्ड्स की "ए" कंपनी को एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया। इस इमारत की भारी किलेबंदी की हुई थी और आतंकवादियों ने उस पर मजबूती से कब्जा किया हुआ था। लांस नायक मेजर सिंह को प्लाटून के आगे बढ़ते समय उसे फायर सुरक्षा प्रदान करने के काम पर लगाया गया था। प्लाटून जैसे ही मुख्य द्वार से अंदर गई इमारत की छत से उस पर स्वचालित हथियारों की भारी गोलीबारी शुरू हो गई। अपनी सुरक्षा की रत्ती भर भी परवाह न करते हुए लांस नायक मेजर सिंह भीषण गोलीबारी के बीच आगे दौड़ पड़े और आतंकवादियों पर गोलीबारी शुरू कर दी। प्लाटून के आगे बढ़ने में सुरक्षा देने के लिए उन्हें अपनी लाइट मशीनगन कई बार एक खम्भे से दूसरे खम्भे तक ले जानी पड़ी। जब वे आगे के कमरे में पहुंचे तो वहां सामने की ओर से भी भारी गोलीबारी हुई और आतंकवादियों ने कमरों में बनाए हुए छेदों से हथगोले फैंकने शुरू कर दिए। लांस नायक मेजर सिंह ही वहां अकेले रह गए और उनपर चारों ओर से गोलीबारी होने लगी। उन्होंने बड़ी मजबूती और साहस के साथ जवाबी कारवाई जारी रखी और एक आतंकवादी को ढेर कर दिया। इसके बाद वे सामने के कमरे की ओर दौड़े और वहां भी एक आतंकवादी को मार गिराया। परन्तु इसी कार्रवाई में वे घायल हो गए। उन्होंने अपनी कंपनी को सौंपे गए कार्य को पूरा होने तक वहां से सुरक्षित स्थान पर पहुंचाए जाने से इन्कार कर दिया।

इस कार्रवाई में लांस नायक मेजर सिंह ने शौर्य, साहस, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

57. 13611199 लांस नायक भगीरथ मल, (मरणोपरान्त)
पैराशूट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान विशेष कमांडो यूनिट को एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। लांस नायक भगीरथ मल सबसे आगे वाली आक्रमण टुकड़ी में थे। इमारत पर पहुंचते ही प्लाटून पर स्वचालित हथियारों से गोलीबारी होने लगा। लांस नायक भगीरथ मल ने आतंकवादियों के मोर्चे पर गैस के गोले फैंकने शुरू किए जिससे कुछ देर के लिए आतंकवादियों की गोलीबारी बंद हो गई। इस कार्रवाई में बुरी तरह से घायल होने के बावजूद वे आगे बढ़ते रहे और आतंकवादियों के एक बहुत मजबूत मोर्चे पर गैस के गोले फैंकते रहे जिससे उनकी पूरी प्लाटून हताहत होने से बच गई। उन्होंने अपना यह काम जारी रखा जब तक आतंकवादियों के स्वचालित शस्त्रों की गोलियों की बौछार से वे वीरगति को प्राप्त नहीं हुए।

इस प्रकार लांस नायक भगीरथ मल ने साहस, शौर्य, दृढ़ संकल्प, नेतृत्व और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

58. 3972319 लांस नायक (कुक) मंगलू राम,
डोगरा रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात आतंकवादी विरोधी कार्रवाई के दौरान लांस नायक (कुक) मंगलू राम को एक राइफल कम्पनी में शामिल होने के लिए कहा गया। उनकी कंपनी को एक महत्वपूर्ण इमारत से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। इमारत की भारी किलेबंदी की हुई थी और उसपर उग्र आतंकवादियों ने बहुत मजबूती से कब्जा किया हुआ था। लांस नायक मंगलू राम जिन्हें अपना ग्रेनेड मे

सबसे आगे रहे और अपनी जान की रत्ती भर भी परवाह किए बिना वे बार-बार आगे बढ़े और अद्भुत साहस के साथ कई आतंकवादियों का ढेर कर दिया। इस कार्रवाई में वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे लेकिन घावों की परवाह न करके [illegible] रहे और कमरों में आतंकवादियों का सफाया कर दिया। उन्हें फिर से एक मशीनगन की गोली लगी जिससे वे बहुत गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना पड़ा।

इस प्रकार लांस नायक (कुक) मंगलू राम ने साहस, दृढ़ संकल्प, प्रशंसनीय पहलशक्ति, शौर्य और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

59. 13679223 गार्ड्समैन बर्जीर खां, (मरणोपरान्त)
ब्रिगेड आफ गार्ड्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 10 गार्ड्स की "डी" कंपनी को एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर के एक हिस्से पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। इमारत की भारी किलेबंदी की हुई थी और आतंकवादियों ने उस पर मजबूती से कब्जा किया हुआ था। पहले तीन कमरों से आतंकवादियों को निकालने के बाद एक कमरे से स्वचालित शस्त्र की भारी गोलीबारी के कारण कंपनी की आगे बढ़ने की गति धीमी पड़ गई। कंपनी के कमांडर ने स्वयं पहल करके इस संक्रिया में सैनिकों का नेतृत्व किया और वे घायल हो गए। गार्ड्समैन बर्जीर खां जो अपने कंपनी कमांडर के एकदम पीछे-पीछे बढ़ रहे थे। अपनी जान पर खेलकर उस कमरे की ओर दौड़े जहां से गोलीबारी हो रही थी। कमरे के छेद से उन्होंने एक हथगोला फेंका और स्वचालित हथियार की गोलीबारी शान्त करा दी। इस कार्रवाई में उन्हें भारी चोटें लगी और वह घटनास्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार गार्ड्समैन बर्जीर खां ने शौर्य, साहस, अद्भुत पहलशक्ति और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

60. 13613012 पैराट्रूपर रमेश कुमार खजूरिया, (मरणोपरान्त)
पैराशूट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात आतंकवादी-विरोधी संक्रिया के दौरान उस 1 पैरा की "सी" टीम ग्रुप में पैराट्रूपर रमेश कुमार खजूरिया भी शामिल थे जिसे एक इमारत से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। पैराट्रूपर रमेश कुमार खजूरिया इस संक्रिया में सबसे आगे थे। अपने लक्ष्य पर पहुंचने के बाद मशीनगन की गोली उनकी टांगों में लगी। अपने घाव की परवाह किए बिना वह गोलियों की भारी बौछार के बीच रेंगते हुए आगे बढ़े और अपने टीम ग्रुप के दो हताहतों को सुरक्षित स्थान पर ले आए। उनके हथियार लाने के लिए दूसरी बार कोशिश करते समय उनके चेहरे पर मशीनगन की गोलियां लगीं और वे तत्काल वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार पैराट्रूपर रमेश कुमार खजूरिया ने पहलशक्ति, प्रशंसनीय साहस, शौर्य और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

61. 4174553 सिपाही हीरा सिंह, (मरणोपरान्त)
कुमाऊं।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात आतंकवादी-विरोधी संक्रिया के दौरान 9 कुमाऊं को एक इमारत से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। इमारत की भारी किलेबंदी की हुई थी और उग्र आतंकवादियों ने उस पर बहुत मजबूती से कब्जा किया हुआ था। सिपाही हीरा सिंह की कंपनी पर आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से भारी और अचूक गोलाबारी शुरू कर दी जिससे कंपनी की कार्रवाई रुक गई। सिपाही हीरा सिंह अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादियों की उस मशीनगन पोस्ट की ओर दौड़े जिसने इस कंपनी का आगे बढ़ना रोक दिया था और एक हथगोला फेंककर उसे शान्त कर दिया। इस कार्रवाई में मशीनगन की गोली से वे घायल हो गए और तत्काल वीरगति को प्राप्त हो गए। इस प्रकार उन्होंने अपने साथियों की जानें बचाई और कंपनी सौंपे गए कार्य को सफलतापूर्वक पूरा कर सकी।

इस कार्रवाई में सिपाही हीरा सिंह ने पहलशक्ति, साहस, शौर्य और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

62. 2583179 सिपाही सी० रायप्पन, (मरणोपरान्त)
मद्रास।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात आतंकवादी-विरोधी संक्रिया के दौरान 26 मद्रास को एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर के दक्षिणी खंड से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। परिसर की भारी किलेबंदी की हुई थी और उस पर उग्र आतंकवादियों ने बहुत मजबूती से कब्जा किया हुआ था। उस कंपनी को, जिसमें सिपाही सी० रायप्पन भी थे, आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। सिपाही सी० रायप्पन की प्लाटून को उस संक्रिया का नेतृत्व करने का आदेश दिया गया जो आतंकवादियों का बहुत शक्तिशाली गढ़ था। अपनी सेक्शन का नेतृत्व करते हुए वे आगे बढ़े और उस इमारत पर धावा बोल दिया। आतंकवादियों ने तीन-चार दिशाओं से उन पर भारी और अचूक गोलीबारी शुरू कर दी जिससे प्लाटून का आगे बढ़ना रुक गया और पूरी प्लाटून के नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया। ऐसी विकट स्थिति में सिपाही सी० रायप्पन ने अपनी जान पर खेलकर आतंकवादियों के मोर्चे पर जबरदस्त धावा बोल दिया। इस कार्यवाही में उन्हें भारी चोटें आईं और वह वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार सिपाही सी० रायप्पन ने दृढ़ संकल्प, प्रशंसनीय पहलशक्ति, शौर्य, साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

63. 2594772 सिपाही रवि कुमार ए०
मद्रास रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात पंजाब में आतंकवादियों के विरुद्ध की गई संक्रिया के दौरान "सी" कंपनी को एक इमारत परिसर में पश्चिमी इमारत की पहली मंजिल पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। यह काम सफलतापूर्वक पूरा हुआ ही था कि सिपाही रवि कुमार ए० ने ऐसे स्थान पर शोर होते सुना जहां से शत्रु के मोर्चे का खतरा हो सकता था। एक जवान को साथ लेकर वे बड़ी तेजी के साथ सीढ़ियों से ऊपर चढ़े और इन्होंने अचानक देखा कि एक हथगोला उनके ऊपर फेंका जाने वाला था। इन्होंने फुर्ती से हथगोला पकड़ लिया और उसे निचली मंजिल की तरफ फेंककर आगे बढ़ना शुरू किया। आतंकवादियों ने तब सिपाही रवि कुमार पर एक और हथगोला फेंका जिससे उनका हाथ और शरीर जल गया। जख्मी होने के बावजूद इन्होंने लाइट मशीनगन के बैरल को झपट लिया और छेद से एक हथगोला फेंककर अंदर के सभी आतंकवादियों को शान्त कर दिया।

इस प्रकार सिपाही रवि कुमार ए० ने साहस, दृढ़ संकल्प, पहलशक्ति और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

64. 4064688 राइफलमैन हरि सिंह, (मरणोपरान्त)
गढ़वाल राइफल्स ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, को "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान 9 गढ़वाल राइफल्स एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर से आतंकवादियों को बाहर निकालने के काम पर लगाई गई थी। इस इमारत के परिसर की भारी किलेबन्दी की हुई थी और आतंकवादियों ने उस पर मजबूती से कब्जा किया हुआ था। राइफलमैन हरि सिंह की सेक्शन को आतंकवादियों के उस मोर्चे पर धावा बोलने का आदेश दिया गया जो इस कम्पनी को आगे बढ़ने से रोक रहा था। आतंकवादियों ने बरामदे में एक खम्बे के पीछे मशीनगन लगाई हुई थी और उस स्थान पर एक खम्बे से दूसरे, दूसरे से तीसरे खम्बे से हाथ ही पहुंचा जा सकता था। सेक्शन ने आतंकवादियों के मोर्चे को साफ करने की कोशिश की लेकिन इसी बीच सेक्शन कमांडर वीरगति को प्राप्त हो गए और मशीनगन की लगातार गोलीबारी अभी भी कम्पनी को आगे बढ़ना रोक रही थी। तब राइफलमैन हरि सिंह स्वयं उस मशीनगन को शान्त करने के लिए आगे बढ़े। उन्होंने खम्भों के पीछे से मशीनगन पोस्ट पर पहुंचने का प्रयास किया लेकिन एक ओर से उन पर भारी गोलीबारी हुई जिससे उनके बाएं बाजू में गोली लग गई। अपने घाव की तनिक भी परवाह न करते हुए उन्होंने मशीनगन पोस्ट पर एक हथगोला फेंका और इससे पहले कि हथगोले के विस्फोट से सहमे आतंकवादी फिर से गोलीबारी करें राइफल टिकाकर गोलियां चलाते हुए बरामदे पर धावा बोल दिया और मशीनगन चला रहे आतंकवादी से राइफल की संगीन भोंप दी। इस कार्यवाही में आतंकवादियों की दूसरी मशीनगन से उन पर गोलियों की बौछार हुई और इससे पहले कि वे झाड़ ले सकें मशीनगन की गोलियों से आहत हुए और वे वीरगति को प्राप्त हो गए ।

इस प्रकार राइफलमैन हरि सिंह ने पहलशक्ति, उत्कृष्ट साहस, दृढ़ संकल्प और शौर्य का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

65. 62521 टी० आर० एन० राम बहादुर, (मरणोपरान्त)
स्पेशल फ्रंटियर फोर्स कमांडो यूनिट ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 जून, 1984)

5/6 जून, 1984, की रात "ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान टी० आर० एन० राम बहादुर एक इमारत के बरामदे से, जिसकी भारी किलेबन्दी की हुई थी और जिस पर आतंकवादियों ने मजबूती से कब्जा किया हुआ था, आतंकवादियों को बाहर निकालने के काम पर लगाई गई प्लाटून में शामिल थे। कमरे से आतंकवादियों को निकालने के दौरान टी० आर० एन० राम बहादुर को मशीनगन की गोली लग गई। अपने घाव की परवाह न किए बिना और अपनी सुरक्षा पर ध्यान न देते हुए उन्होंने वहां से हटाए जाने से इन्कार कर दिया और अपनी टीम के साथ आगे बढ़ते रहे। घायल होने के बावजूद उन्होंने 3 और कमरों को खाली करवा दिया और चार आतंकवादियों को ढेर कर दिया। इस कार्यवाही में घाव से बहुत खून बहने के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार टी० आर० एन० राम बहादुर ने दृढ़ संकल्प, साहस, शौर्य और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

66. 4165151 हवलदार कल्याण सिंह,
कुमाऊं ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 जून, 1984)

6 जून 1984, की सुबह आतंकवादियों के विरुद्ध की गई कार्रवाई के दौरान हवलदार कल्याण सिंह को एक इमारत के निचले तल में छिपे हुए आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया। इस तल में पहुंचने के लिए बहुत ही तंग सीढ़ियों से जाना पड़ता था जहां से एक बार में केवल दो ही व्यक्ति निकल सकते थे। हवलदार कल्याण सिंह ने स्वयं पहल करके दरवाजा तोड़ा, उसके अन्दर दो हथगोले फेंके और साथ ही फायर करते हुए दरवाजे की तरफ दौड़े। इस समय काफी नीचे बने आलों से रुक-रुक कर गोलीबारी हो रही थी। हथगोलों और स्टेनगन की गोली से घबराकर अचानक लगभग अस्सी आतंकवादी कमरे से निकल-निकल कर भागने लगे। उनको यह मालूम भी नहीं हो सका कि यह सारी कार्रवाई केवल एक ही व्यक्ति कर रहा था। हवलदार कल्याण सिंह एक एन० सी० ओ० के साथ इस तल में गए और साफ किया तथा वहां से दो राइफलें और बड़ी मात्रा में गोला-बारूद बरामद किया ।

इस प्रकार हवलदार कल्याण सिंह ने अद्वितीय साहस, अद्भुत पहलशक्ति, शौर्य, नेतृत्व तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

67. 4172990 सिपाही रघुनाथ सिंह, (मरणोपरान्त)
कुमाऊं ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 जून, 1984)

6 जून, 1984, को आतंकवादी-विरोधी संक्रिया के दौरान मेजर बी० के० मिश्र के साथ सिपाही रघुनाथ सिंह रेडियो आपरेटर थे। संक्रिया के दौरान जब मेजर बी० के० मिश्र लड़ते-लड़ते गिर गए उस समय सिपाही रघुनाथ सिंह उनसे लगभग 25 मीटर पीछे थे। सिपाही रघुनाथ सिंह अपनी सुरक्षा का तनिक भी परवाह किए बिना अपने कम्पनी कमांडर को बचाने दौड़े। उनके पास पहुंचते ही उन्होंने देखा कि वे वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। सिपाही रघुनाथ सिंह ने तुरन्त मेजर बी० के० मिश्र की कारबाइन उठाई और आतंकवादियों के मोर्चे की ओर दौड़ पड़े। लेकिन गोलियों की भारी बौछार के कारण वे भी वीरगति को प्राप्त हो गए ।

इस प्रकार सिपाही रघुनाथ सिंह ने साहस, शौर्य, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

68. 4173244 सिपाही जगदीश चन्द्र, (मरणोपरान्त)
कुमाऊं ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 जून, 1984)

6 जून, 1984, को 0530 बजे आतंकवादी-विरोधी संक्रिया के दौरान "डी" कम्पनी को एक इमारत से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था जिस पर उग्र आतंकवादियों ने मजबूती से कब्जा किया हुआ था। आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के कारण कम्पनी का आगे बढ़ना भी इमारत के बेस पर ही रुक गया। सिपाही जगदीश चन्द्र ने देखा कि साथ वाली इमारत की पहली मंजिल को जाने वाली सीढ़ियों के ऊपर से एक मशीनगन से गोलीबारी की जा रही थी। अपने जीवन की परवाह किए बिना सिपाही जगदीश चन्द्र आगे दौड़े और उस मशीनगन पर हमला करके सफलतापूर्वक उसे शान्त करा दिया जिससे उनकी कम्पनी सौंपे गए कार्य को पूरा करने में सफल हो सकी। इस कार्यवाही में उनको भारी चोटें लगीं और वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

इस प्रकार सिपाही जगदीश चन्द्र ने पहलशक्ति, साहस, शौर्य, दृढ़ संकल्प और उच्चकोटि का कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

69. 2872071 लांस नायक दिलबाग सिंह,
राजपूताना राइफल्स ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 जून, 1984)

7/8 जून 1984, की रात आतंकवादी-विरोधी संक्रिया के दौरान लांस नायक दिलबाग सिंह उस दल के सदस्य थे जिस एक इमारत से आतंकवादियों को बाहर निकालने का काम सौंपा गया था। यह दल जब अपने लक्ष्य पर पहुंचा तभी आतंकवादियों ने तोप से गोलीबारी की और इमारत की छत से भी गोलीबारी शुरू कर दी। अपने कम्पनी कमांडर कैप्टन के० एस० चौधरी का युद्ध-नारा लगाते हुए सुनते ही ये अपने कम्पनी कमांडर के साथ चार दीवारी पर बने तोप मोर्चे की ओर दौड़ पड़े। तोप से आ रहे गोलों की परवाह किए बिना ये चार दीवारी फांद गए और देखा कि इनके कम्पनी कमांडर छुरे से सैस आतंकवादी से भिड़े हुए थे। ये तुरन्त आतंकवादी पर झपट पड़े जिससे इनके कम्पनी कमांडर ने तोप पर कब्जा कर लिया तथा उन्हें भारी खतरे से भी बचाया ।

इस प्रकार लांस नायक दिलबाग सिंह ने अद्भुत पहलशक्ति, दृढ़ संकल्प, अनुकरणीय साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

70. कैप्टन श्याम सुन्दर रामपाल (एम० एम० 11027), (मरणोपरान्त) आर्मी मेडिकल कोर ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 जून, 1984)

"ब्लू स्टार" संक्रिया के दौरान कैप्टन श्याम सुन्दर रामपाल 10 डोगरा के रेजिमेंट मेडिकल अफसर थे। 8 जून, 1984, को यह बटालियन एक महत्वपूर्ण इमारत परिसर मे कब्जा करने मे लगी हुई थी। तभी वहा सिपाही अर्जुन सिंह को गोली लग गई जिससे वे बुरी तरह घायल हो गए। उनके गम्भीर रूप से हताहत होने की खबर सुनते ही कैप्टन श्याम सुन्दर रामपाल घायल जवान को चिकित्सा सहायता देने के लिए तुरन्त घटनास्थल की ओर बढ़े। जब वे चिकित्सा कर रहे थे तभी आतंकवादियों ने उनपर भीषण गोलीबारी शुरू कर दी और वह गम्भीर रूप से घायल हो गए। आतंकवादी पास से ही गोलीबारी कर रहे थे इसलिए वे कैप्टन रामपाल और एक अन्य जवान को घसीट कर अपने कमरे मे ले गए और वहां उन दोनों का वध कर दिया

इस कार्रवाई में कैप्टन श्याम सुन्दर रामपाल ने उत्कृष्ट साहस, शौर्य, पहल-शक्ति और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने प्राणों का आहुति दे दी ।

71. विंग कमांडर तजिन्दर पाल सिंह छतवाल, वी० एम० (11290), उड़ान (पायलट) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जुलाई 1984)

विंग कमांडर तजिन्दर पाल सिंह छतवाल को बहुत ऊँचाई पर हवाई-अभुरक्षण सैन्य दलो का महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए चुना गया। इस सारे क्रिया कलाप के निरन्तर बदलते वृश्यो और पूर्ति की तात्कालिक आवश्यकताओं को देखते हुए विंगकमांडर तजिन्दरपाल सिंह छतवाल अपने मिशन पर फौरन जुट गए। इन्होंने बहुत सही ठिकाने पर सामान गिराकर अपनी उच्च व्यावसायिक क्षमता का परिचय दे दिया। बाद मे हालात ने ऐसे करवट बदले कि कैंप हटाकर एक खड़ी ढाल पर ले जाना पड़ा, जहा पर वस्तुओं के स्टाक की स्थिति बड़ी शोचनीय हो गई। विंग कमांडर छतवाल को जमीन से मात्र 5–10 मीटर की ऊंचाई पर उड़ान भरनी पड़ी। 25 जलाई, 1984, को खतरो की परवाह किए बिना ये अपने मिशन पर लगे रहे और नए कैम्प पर कुल मिलाकर 17 टन साजो-सामान गिराने का काम इन्होंने पूरा कर डाला ।

विंग कमांडर छतवाल ने एक दूसरा कमाल का करतब यह किया कि फिल्म तैयार करते समय 5.7 किलोमीटर से भी अधिक ऊंचाई पर एक घण्टे से अधिक उड़ाने भरीं और 23 टन से भी अधिक माल अग्रिम चौकियों तक पहुंचाया ।

इस प्रकार विंग कमांडर तजिन्दर पाल सिंह छतवाल ने व्यावसायिक क्षमता, बौद्धिक योग्यता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

72. 643826 कारपोरल चारीवुकालायिल गोविन्दन सोमन, एयर फ्रेम फिटर ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 31 जलाई, 1984)

कारपोरल चारीवुकालायिल गोविन्दन सोमन, एयर फ्रेम फिटर वे एक तकनीकी टीम का सदस्य बनने की इच्छा प्रकट की। दो चीता हेलिकाप्टरों, जिन्हे वायु अनुरक्षण मिशन के दौरान लगभग 18,000 फुट की ऊंचाई पर मजबूरन उतरना पड़ा था को ढूंढने के लिए तैनात किया गया। इसके लिए विभिन्न सामानों का बड़ी सूझ-बूझ के साथ समूहन और साथ ही मशीनी थाल से हेलिकाप्टर के निचले भाग से सामान की खोलने, पैक करने तथा लटकाने का काम अंजाम देना था। जब हेलिकाप्टरो को खोलकर नीचे उतार लाने की कार्रवाई शुरू हुई तो वायुसेना के फिटर के रूप में केवल कारपोरल सोमन ही उस टीम में ऐसे बचे थे जो मौके पर समूचे हेलिकाप्टरो को खोलने का काम खत्म सकते थे। भारी जिम्मेदारी का पूरा अहसास रखते हुए इन्होंने अपनी व्यक्तिगत असुविधाओं और स्वास्थ्य के खतरे में पड़ने की चिन्ता किए बिना लगातार घण्टों काम किया। इन्होंने चार दिनो का काम केवल डेढ़ दिन में कर दिखाया। बेस कैंप में भी वह कई हेलिकाप्टरो में हुई खराबियो को समय पर ठीक करने में बड़े सहायक सिद्ध हुए ।

31 जुलाई, 1984, को इन्हे दुबारा दूसरे हेलिकाप्टर को खोलकर उतार लाने का काम सौंपा गया। परन्तु एक घटना हो जाने के कारण पार्टी को उस भारी ऊंचाई पर बिना भोजन तथा शिविर के समय काटना पड़ा। कारपोरल सोमन ने बर्फीली दरारो मे फिसल कर गिर पड़ने के भारी जोखिम का सामना करते हुए तीन घण्टे पैदल चलकर निकटतम सेना शिविर तक चलने की पहल की। जब इनका एक साथी गहरी खाई मे जा गिरा तो वह आगे बढ़े और उसकी जान बचा ली ।

इस प्रकार कारपोरल चारीवुकालायिल सोमन ने साहस, शौर्य, क्षमता और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

73. 5443621 हवलदार कृष्ण बहादुर गुरंग, (मरणोपरान्त) 5 गोरखा राइफल्स ।

[पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 नवम्बर, 1984]

5/6 नवम्बर, 1984, की रात दिल्ली के पहाड़गंज क्षेत्र में कुछ शरारती तत्व एक इमारत से निहत्थे नागरिको पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। कम्पनी कमांडर मेजर यशजीत सिंह त्यागी उस इमारत की ओर दौड़े और शरारती तत्वों द्वारा कब्जे मे की गई इमारत को घेरने के लिए अपनी पार्टी को तीन ग्रुपों मे बांट दिया। हवलदार कृष्ण बहादुर गुरंग जो पार्टी के एक सदस्य थे, उस इमारत की छत पर चढ़ गए। उन्होंने फुर्ती से कार्रवाई करके उनको अचम्भे में डाल दिया और जब वे उन पर काबू करने ही जाते थे कि उनमें से एक ने जो दीवार के पीछे छिपा था, हवलदार गुरंग पर नजदीक से ही गोली चलाई। यद्यपि उनके शरीर से बहुत खून बह रहा था फिर भी हवलदार कृष्ण बहादुर गुरंग घिसटते हुए छत के एक किनारे पर पहुंच गए और अपने साथियों को अन्य दिशाओं मे उस इमारत पर पहुंचने के लिए जोर-जोर से आवाजे देने लगे। साथ ही, लगातार गोलीबारी जारी रखकर शरारती तत्वों को घेरे रखा और उनका ध्यान दूसरे दल की गतिविधियों की ओर नही जाने दिया। वे वहां से हटाए जाने से तब तक इन्कार करते रहे जब तक कि उनके कम्पनी कमांडर ने इस बात की पुष्टि नहीं कर दी कि सभी शरारती तत्व पकड़ लिए गए। इसके बाद गम्भीर रूप से घायल होने पर उन्हे अस्पताल पहुंचाया जहां उनका मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार हवलदार कृष्ण बहादुर गुरंग ने साहस, शौर्य, अद्भुत पहल-शक्ति, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के लिए अपने जीवन का बलिदान दे दिया ।

सु० नीलकण्ठन
राष्ट्रपति का उप सचिव

उद्योग और कम्पनी कार्य मंत्रालय

कम्पनी कार्य विभाग

नई दिल्ली-1, दिनांक

आदेश

स० 27/9/85–सी० एल०–2—कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 209क की उपधारा (1) के खण्ड (2) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्र सरकार एतद्द्वारा कम्पनी कार्य विभाग में श्री रखलदास मुखर्जी, सहायक निरीक्षण अधिकारी को उक्त धारा 209क के उद्देश्यों के लिए प्राधिकृत करती है ।

सी० एल० प्रथम, अवर सचिव

(औद्योगिक विकास विभाग)

तकनीकी विकास महानिदेशालय

नई दिल्ली, दिनांक 19 फरवरी 1985

संकल्प

सं० सैर–II(21)/83–खण्ड 5—भारत सरकार के 22 सितम्बर 1983 के संकल्प सं० सैर—II(21)/83–खण्ड–4 में आंशिक संशोधन करते हुए, जिसमें 22 सितम्बर 1983 के संकल्प सं०–सैर–II(21)/83–खण्ड–4 के तहत संशोधन किया गया है, तकनीकी विकास महानिदेशालय, उद्योग भवन, नई दिल्ली में उप-महानिदेशक, श्री एन० बिस्वास को सेवानिवृत्त औद्योगिक सलाहकार, श्री आर० थंजन, के स्थान पर सैरेमिक उद्योग की विकास नामिका का अध्यक्ष नियुक्त करने का निर्णय किया गया है।

आदेश :—आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को भेजी जाए। यह भी आदेश दिया जाता है कि आम जानकारी के लिए इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

के० सी० गंजवाल, निदेशक (प्रशासन)

शिक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 16 फरवरी 1985

सं० एफ० 10–3/85–यू०–5—भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के संस्था ज्ञापन पत्र और नियमावली के नियम, 3, 6 और 10 के अन्तर्गत भारत सरकार के निम्नलिखित को नामजद करने का निश्चय किया है :—

(I) श्री आनन्द स्वरूप, सचिव, शिक्षा मंत्रालय को श्रीमती सरला ग्रेवाल के स्थान पर, श्रीमती सरला ग्रेवाल के शेष कार्यकाल अर्थात् 4–3–1987 तक परिषद के सदस्य के रूप में।

(II) कुमारी रोमा मजुमदार, सचिव, समाज और महिला कल्याण मंत्रालय को, श्री आर० पी० खोसला के स्थान पर, श्री खोसला के शेष कार्यकाल अर्थात 19–12–1986 तक परिषद के सदस्य के रूप में।

एस० के० सेनगुप्त, अवर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1985

No. 23-Pres/85.—The President is pleased to approve the award of 'SHAURYA CHAKRA' to the following persons for acts of gallantry :—

1. Shri Baj Singh Bhullar, P.C.S.,
Urban Ceiling Officer,
Amritsar.

(*Effective date of the award* : 18*th October*, 1982)

On the 18th October, 1982, Shri Baj Singh Bhullar, Executive Magistrate, Amritsar, was detailed for duty alongwith the police in Chowk Darbar Sahib, Amritsar. A violent mob of 400 to 500 headed by S. Harmohinder Singh Sandhu, came from the side of Chowk Ghantaghar and set on fire a Punjab Roadways Bus, a police jeep and other bus near Sarai Guru Ram Dass. Thereafter the mob started moving towards Katra Ahluwalia. Shri Surjit Singh Kahlon, Dy. Supdt. of Police, Jullundur and Shri Baj Singh Bhullar, Executive Magistrate, Amritsar were detailed to stop the advance of unruly mob to chowk Katra Ahluwalia to present a Hindu Sikh clash. Immediately Shri Bhullar alongwith the police party arrived at Chowk Katra Ahluwalia and brought the situation under control. After sometime, however, the mob, armed with deadly weapons attacked the police party and forcibly lifted Shri Surjit Singh Kahlon after injuring him with Kirpans. The infuriated mob was about to throw Shri Kahlon into a burning bus. Realising the gravity of the situation, Shri Bhullar jumped into the fray and rescued Shri Kahlon. While performing this act Shri Bhullar suffered head injuries and had to be hospitalised.

Shri Baj Singh Bhullar thus displayed exemplary courage and devotion to duty in saving a human life in utter disregard to his personal safety.

2. Shri Asok Raja Ganguly,
Student of Dinhata College,
Cooch Bihar Distt.

(*Effective date of the award* : 6*th November*, 1982)

On the 6th November, 1982, Shri Asok Raja Ganguly, son of Prof. Alok Kumar Ganguly, was studying in their first floor flat of the Dinhata College Professor's Quarters. About six individuals, claiming to be [illegible] entry into the flat and threatened Shri Asok [illegible] a pipe gun damanding money and valuables in the house. On hearing the commotion, Prof. Alok Kumar Ganguly came to the room but the dacoits pointed the gun at him.

Seeing the mortal danger to his father, Asok Ganguly grappled with the dacoits and snatched away the pipe gun. In the process he received stab injuries with a dagger. Prof. Alok Kumar Ganguly at this stage raised an alarm due to which the neighbours came to their assistance. This made the decoits run away leaving the gun and some other articles. In spite of his serious injuries, Ashok Ganguly chased them. Subsequently he had to be hospitalised for treatment of his serious injuries.

Shri Asok Raja Ganguly thus displayed conspicuous courage and bravery unmindful of the risk involved to his life.

3. 2851342 Naib Subedar Jaswant Singh, (Posthumous)
Mechanised infantry.

(*Effective date of the award* : 10*th November*, 1982)

On the 10th November, 1982, while a Military Special Train was standing at Tundla South Yard, an explosion was heard and something smouldering atop a 3 ton vehicle was noticed. Naib Subedar Jaswant Singh, the administration JCO of train and some others saw this and immediately rushed to the spot. Having organised a cordon and a fire extinguishing party, Naib Subedar Jaswant Singh ordered the party to cut open the tarpaulin and pull it down so that fire could be extinguished. He himself led the fire extinguishing party and started cutting the side ropes with an axe. As Havildar Kan Singh, a member of the party, climbed on to the top of the Bonnet in order to pull the tarpaulin down, he saw Naik Shyam Singh, lying with his clothes smouldering. In trying to extricate Naik Sham Singh, he got an electric shock, due to which all the personnel who were trying to pull down the smouldering tarpaulin also got electric shock in varying degrees. In this process Naib Subedar Jaswant Singh himself got an electric shock and was thrown away. He was rushed to Railway Hospital but he expired on the way.

In this incident Naib Subedar Jaswant Singh displayed leadership, courage and devotion to douty of a high order.

4. 2862419 Havildar Kan Singh, (Posthumous)
Mechanised Infantry.

(*Effective date of the award* : 10*th November*, 1982)

On the 10th November, 1982, while a Military Special Train was standing at Tundla South Yard, an explosion was heard and something smouldering atop a 3 ton vehicle was noticed. Naib Subedar Jaswant Singh, the adminsitration JCO of train also saw the smouldering on top of the vehicle. Havildar Kan Singh was detailed to lead the fire extinguishing party. The party started cutting open the tarpaulin. Havildar Kan Singh climed on to the top of the Bonnet in order to help pull the tarpaulin down. As he stood on the Bonnet he saw Naik Shyam Singh, lying with his clothes smouldering. In order to extricate Naik Shyam Singh, he climbed up further, but in this process came in contact with live wire and received a severe electric shock and his entire body was charred. He was rushed to the Hospital where he later expired.

In this incident Havildar Kan Singh displayed extreme courage and dedication to duty of a high order.

5. G/27270 DME Amar Singh.

(*Effective date of the award* : 27*th March*, 1983)

DME Amar Singh was operating a dozer for snow clearance during March—May, 1983 on Kargil-Leh Road. The task was fraught with grave danger due to frequent occurrence of avalanches and required enormous endurance and will power in work in Sub Zero temperature.

On the 10th March, 1983 Shri Amar Singh and his helper were buried under an avalanche but emerged from the snow miraculously unhurt and was back at the controls of his dozer.

On the 27th March, 1983 at KM 265, Shri Amar Singh was buried for a second time alongwith his machine. He was dug out after 45 minutes. But he was not cowed down and for the next fourteen days continued with snow clearance relentlessly. His perseverance in the face of heavy odds is a beacon of inspiration to others in facing grave dangers high up in the snow bound mountains.

Shri Amar Singh thus displayed cool courage, undaunted spirit and devotion to duty of a high order.

6. 74510 Rifleman Manasu Lishu.
Assam Rifles

(*Effective date of the award* : 28*th March*, 1983)

On the 28th March, 1983, Rifleman Manasu Lishu of 7th Assam rifles, who was on leave at his village Gandhigram, was informed that two unfamiliar persons (one of them carrying weapon) were seen in the area

Rifleman Manasu Lishu immediately organised local help and rushed to the spot where they were last seen. On reaching the hideout the apprehended one of the suspects Shri Ayhuiy Ahihenahpha Lishu. The other suspect Shri Akhiiana Fucha Lishu ran out of the hideout with his weapon but found himself surrounded on all sides. Shri Manasu Lishu confronted the suspect and jumped on him At this the suspect fired the gun at point blank range. Fortunately the round missed him but inflicted powder burns on a village. The suspect was, however, apprehended.

Riflman Manasu Lishu thus displayed initiative, courage, presence of mind and a high sense of public duty.

7. G/19955 DME Sachidanand (Posthumous)

(*Effective date of the award* : 6*th April*, 1983)

G/19955 DME Sachidanand was deployed on snow clearance operation on Road Sector Dras—Kargil of Srinagar—Leh Road. The task assigned to Shri Sachidanand was fraught with grave danger to life. On the 6th April, 1983 suddenly far up on the mountain side, a small mass of snow slipped and within a matter of seconds formed into a massive avalanche. Shri Sachidanand was hit by the avalanche with full force and died while still at the controls of the machine.

Shri Sachidanand thus exhibited determination, courage and devotion to duty of a high order.

8. G/97975 Pioneer Bishan Singh (Posthumous)

(*Effective date of the award* : 6*th April*, 1983)

G/97975 Pioneer Bishan Singh was detailed for assisting the dozer operator on Road Sector Dras—Kargil of Srinagar-Leh Road. On the 6th April, 1983, he was engaged in snow clearance work and was guiding the dozer operator. Suddenly a small mass of snow slipped high up on the mountain side and developed into a massive avalanche which hit the working party. It was found later that four men were buried in the snow and three were missing. Pioneer Bishan Singh was one of the missing. His dead body was, however, recovered after three days.

Pioneer Bishan Singh thus displayed courage, fortitude and devotion to duty of a high order.

9 Squadron Leader Pradeep Kumar Tayal, VM, (10474) F(P) (Retd).

(*Effective date of the award* : 21*st April*, 1983)

Squadron Leader Pradeep Kumar Tayal has been engaged in test flying duties at Hindustan Aeronautics Limited since

October, 1977. On the 21st April, 1983, he was faced with a hydraulic failure on an Ajeet aircraft, which prevented his nose undercarriage from lowering. During his attempts to lower the undercarriage, his engine also got switched off. He displayed great courage and skill in handling this emergency and was able to restart the engine successfully and also lower the undercarriage after considerable struggle. This resulted in a safe landing and saving of an aircraft.

Squadron Leader Pradeep Kumar Tayal thus displayed exceptional courage, coolness, rare presence of mind, expert professionalism and devotion to duty of a high order.

10. Lt. Col Madan Lakhi Thadani (IC-16702), Artillery.

(*Effective date of the award* : 15*th June*, 1983)

Lt. Col. Madan Lakhi Thadani is a flying instructor, operating in the difficult terrain of North and East Sikkim. On the 15th June, 1983, information was received that an immediate rescue mission had to be undertaken to evacuate two members of the Sivani Expedition to JONSANO peak which is 24482' high. The casualties were at the base camp at a height of 18000'. Lt Col. Madan Lakhi Thadani was asked to undertake the rescue. He landed the helicopter at 18000' in adverse weather conditions amidst rocks and snow, picked up the casualty and brought them to the base hospital.

Lt. Col. Madan Lakhi Thadani thus displayed courage professional competence and devotion to duty of a high order.

11. G/129181 Pioneer N. Rajan.

(*Effective date of the award* : 18*th June*, 1983)

Phuntsholing-Thimpu Road is the life line of Bhutan being the only means of communication between the capital and other important districts. On the 18th June, 1983, torrential rains had caused a major landslide at Km 20.350 of the road thereby severely disrupting communications. The weather was extremely bad making all efforts at clearing the slide difficult and risky.

G/129181 Pioneer N. Rajan was deployed half way across the slide since the visibility remained poor with the task of warning the dozer operator clearing the slide about the onset of slides and of rolling boulders. Undeterred by the falling boulders, Pioneer N. Rajan executed his job at great personal risk and in the process received injuries. His presence of mind, and timely warning not only saved the operator and dozer but also made it possible to clear the slide in a record time.

Pioneer N. Rajan thus displayed undaunted courage and devotion to duty of a high order.

12. 4248185 Naik Jaigovind Singh, Bihar.

(*Effective date of the award* : 22*nd July*, 1983)

On the night of 22nd July, 1983 a raiding party was sent to apprehend hostiles reported to be in a hideout in the jungles near Mampui in Mizoram. While the raid was in progress Naik Jaigovind made a frontal attack on the hostiles in utter disregard to his personal safety. As a result of his bold and courageous action one hostile was killed and the other apprehended. Two rifles, 83 rounds of ammunition and valuable documents were recovered.

Naik Jaigovind Singh thus displayed exemplary courage at great risk of his life under fire and exceptional devotion to duty.

13. JC-81234 Naib Subedar Jyoti Prasad Nautiyal, Assam Rifles.

(*Effective date of the award* : 26*th July*, 1983)

On the 26th July, 1983, Naib Subedar Jyoti Prasad Nautival was detailed as Commander of the group operating from the North side and was assigned the task for covering the advance of the main column which was moving towards area Bump. When the column was about five hundred yards away from the area Bump the hostiles opened effective fire. Naib Subedar Jyoti Prasad Nautiyal was ordered to move to a dominating feature ahead and engage the hostiles. He immediately dashed towards the feature which was under hostile fire. His action from dominating ground unnerved the undergrounds and helped the main column to advance. The undergrounds fled in confusion, but the fire from the party

under Naib Subedar Jyoti Prasad Nautiyal prevented them escaping in the jungles across the International Border.

Naib Subedar Jyoti Prasad Nautiyal was given instructions immediately to advance further and commence search of the area in South East. When the main column had advanced further for about two kilometers, the undergrounds again fired. Immediately Naib Subedar Jyoti Prasad Nautiyal moved from North side and observed one underground who had taken up position and was about to fire. Hand-to-hand fight ensued, but Naib Subedar Jyoti Prasad Nautiyal managed to over-power the hostile and pinned him to the ground. His timely action helped not only in apprehending the hard-core and notorious self styled Lieutenant Thongo, but also in saving the lives of his men.

Naib Subedar Jyoti Prasad Nautiyal thus displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty of a high order.

14. 82156 Naik Michi Khemlungan, Assam Rifles.

(Effective date of the award : 26*th July*, 1983)

82156 Naik Michu Khemlungan was serving in 8 Assam Rifles Post at Denshoi which is close to the Indo-Burma border. It dominates one of the avenues of trans border movement of the Naga undergrounds (UG) with their camps in Burma. On the 26th July, 1983, Naik Michu Khemlungan received information about some undergrounds wanting to infiltrate into our territory and volunteered to act as guide to the suspected area. He guided his column to the likely hiding place of the undergrounds on the border just in time when the undergrounds had fallen back to the same spot. On being noticed the undergrounds opened fire. Without waiting Naik Michu Khemlungan pounced on one of the undergrounds and captured him alongwith his Chinese weapon. This lightning action demoralised the other underground who fled across the border.

In this action Naik Michu Kemlungan displayed initiative, indomitable courage and devotion to duty of a high order.

15. 4050829 Lance Havildar Gabar Singh Negi, Garhwar Rifles.

(Effective of the award : 22*nd August*, 1983)

On the 22nd August, 1983. Lance Havildar Gabar Singh Negi was the leader of an assault group which has been directed to capture two armed Mizo National Front hostiles trapped in ambush. Instead of surrendering, the hostiles made a desperate and daring bid to escape. In utter disregard to his personal Safety and unmindful of the hostile fire, Lance Havildar Gabar Singh rushed with his assault group at the hostiles and killed one extremist with an accurate burst from his sub Machine Garbine.

In this action Lance Havildar Gabar Singh Negi displayed courage, initiative and devotion to duty of a high order.

16. Captain Pavan Chander Bhandari (IC-27743), Artillery.

(Effective date of the award : 6*th September*, 1983)

On the 6th September, 1983, Captain Pavan Chander Bhandari was sent to Kun Peak at an height of 23100 feet to rescue a lady member of the Austrian Mountaineering Expedition who had got trapped on the mountain. Captain Bhandari had to get out of the helicopter and walk a good distance to recover the casualty. In the process, he himself got into a crevasse but this did not distract him from proceeding with the task. On reaching the casualty he had to physically lift and carry her to the waiting helicopter.

Captain Pavan Chander Bhandari thus exhibited extra ordinary courage and determination and devotion to duty of a high order.

17 Captain Gurjeet Singh Bajwa (IC-29693), Vr. C., Artillery.

(Effective date of the award : 6*th September*, 1983)

Captain Gurjeet Singh Bajwa was sent on a rescue mission on the 6th September, 1983, to Kun Peak to rescue a lady member of the Austrian Mountaineering Expedition who trapped on the mountain. Captain Gurjeet Singh Bajwa landed the helicopter at the height of 19800 ft in a place interspersed with deep crevasses with a surface covered with loose snow which could be dangerous and evacuated the casualty safely with the help of his co-pilot.

Captain Gurjeet Singh Bajwa thus displayed courage, intiiative and devotion to duty of a high order.

18. No. 13734745 Naik Balawan Singh (Retired), 8 Jak Rifles.

(Effective date of the award : 8*th September*, 1983).

On the 8th September, 1983, information was received that two enemy agents, one of whom was armed with a pistol, were approaching a village located close to the border, in a sensitive area. As these two persons approached the village, they were followed by some villagers who kept a watch on them.

Naik Balawan Singh (Retired) a resident of the village moved stealthily from one side keeping out of their range. At an opportune moment when the intruders were not attentive he pounced on them. He grappled with them and one of the intruders tried to fire the pistol. However with the assistance of some other persons who had joined him by then, the intruders were overpowered. On investigation the villagers found that the two strangers were spies who had illegally crossed over to India and were trying to go to Jammu for subversive activities. They were then handed over to Army Authorities

In this incident Naik Balawan Singh displayed exemplary courage initiative and a high sense of public duty.

19. GO-705 Shri Binay Kumar Basu, Executive Engineer (Civil).

(Effective date of the award : 10*th September*, 1983

A ghastly tragedy occured on the night of 10/11th September, 1983 at Manul in Sikkim (Project Swastic) when family quarters of GREF personnel, huts of casual labourers and Government store sheds were completely washed away by a huge land slide. Shri K. K. Basu, EE (Civil), Officer Commanding inspired his men and initiated immediate steps and saved Govt. stores worth lakhs of rupees he took on the spot decisions to restore North Sikkim Highway into a fit condition for normal vehicular traffic within a short period.

Shri Binay Kumar Basu, Executive Engineer (Civil) thus displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty of a high order.

20. GO-807 AEE (C) Harbhajan Singh Saka.

(Effective date of the award : 10*th September*, 1983)

Calamity struck in North Sikkim on the night 10/11th September, 1983 when there was a huge land slide in Manul. The road communication to the disaster sites was completely disrupted. Shri Harbhajan Singh Saka who was doing duties in another sector was brought in to restore the road communications. He by his expertise set in a fast pace of restoration measures and inspite of very hard conditions numerous land slides were tackled systematically.

Shri Harbhajan Singh Saka thus displayed fortitude, determination and devotion to duty of a high order.

21. GO-1106 AEE (C) S.S.K. Subramanian.

(Effective date of the award : 10*th September*, 1983)

Calamity struck in North Sikkim on the night of the 10th/11th September, 1983 when there was a huge land slide in Manul. The road communications to the disaster sites was completely disrupted. Shri S. S. K. Subramanian was the officer posted nearest to the disaster site. Personnel and families of his unit were among the victims of the disaster. He by his expertise set in a fast pace of restoration measures and got the numerous land slides tackled systematically.

Shri S. S. K. Subramanian thus displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order.

22. 2675557 Sepoy Ram Narain Singh, Grenadiers.

(*Effective date of the award* : 5*th November*, 1983)

On the 5th November, 1983, Sepoy Ram Narain Singh was proceeding on leave to his village Bhartar Pura by 581 UP Kachiguda Express from Nasirabad. When the train was passing through Bandanwara and Singhawal railway stations, he heard shouts for help from the neighbouring compartment. Just then the train was brought to a halt and he saw five armed dacoits jumping off the train and fleeing through the open fields. On seeing this, Sepoy Ram Naram Singh urged his co-passengers to follow him and he jumped off the train and gave pursuit to the dacoits. The dacoits opened fire which deterred the other passengers but Sepoy Ram Narain Singh continued to chase the dacoits. Arming himself with a lathi picked up from the field he managed to first knock down one dacoit. After a fierce hand to hand struggle in which he sustained injuries, he knocked another one also down. The two dacoits were later handed over to the police authorities.

In this incident Sepoy Ram Narain Singh exhibited great courage, valour and a high sense of public duty.

23. Wing Commander Viswanathan Natrajan (10462), Flying (Pilot).

(*Effective date of the award* : 28*th December*, 1983)

Wing Commander Natrapan was one of the four MI-8 pilots in the IAF contingent of the IIIrd Indian Antartica Expeditions. On the 28th December, 1983, he was assigned to transfer heavy construction and other material from the ship to the base camp. The terrain was unknown and forbidding. The unpredictable adverse weather condition with extremely strong surface winds blowing all the time, the drifting snow and the persistent low visibility, made helicopter operations extremely difficult. All these hazards and the non-availability of other helicopters did not deter Wing Commander Natarajan. He met all the flying commitments, by flying 61.30 hours in 212 sorties. It was due to his persistent efforts that the availability of heavy construction material was ensured and the Army Engineers were able to complete the construction of the protp station in time.

Wing Commander Viswanathan Natrajan thus displayed indomitable courage, determination and devotion to duty of a high order.

24. Surgeon Lieutenant Commander Aloke Banerjee (75248-T).

(*Effective date of the award* : 29*th December*, 1983)

Surgeon Lieutenant Commander Aloke Banerjee was the Medical Specialist accompanying the Third Indian Expedition to Antarctica. On the 29th December, 1983, he heard that a MI-8 helicopter had crashed into the sea. He quickly rushed up to the deck and joined the other members of the team to deal with the emergency. He evacuated Wg. Cdr. R. S. Tandon, W. Cdr. B. D. Madhok, Sgt. A. B. Jadav and Sgt. S. B. Gupta from the ice shelf and then assessed the degree of hypothermia to which each of the patients had been subjected. He instituted emergency measures to counteract the effect of hypothermia starting with Sgt. A. B. Jadav who was in a poor condition. He was able to quickly reverse the effects of hypothermia and saved all the patients from further complications. He then took his turn at monitoring the vital parameters of Wg. Cdr. B. D. Madhok throughout the night. With his ministration the patient was stabilised by morning

During the long winter months in the most hostile environmerits of Antarctica and under psychological stresses, Surg. Lt. Commander Banerjee single handedly tackled the many serious medical emergencies that arose including serious casualties.

Surgeon Lieutenant Commander Aloke Banerjee thus displayed courage, professional skill, dedication and devotion to duty of a high order.

25. 280830 Sergeant Shyam Behari Gupta, Instrument Fitter.

(*Effective date of the award* : 29*th December*, 1983)

Sergeant Shyam Behari Gupta was a technical member of the Air Force team of the Third Indian Scientific Expedition to Antartica. The success of the expedition to a large extent was dependent upon the logistic support provided by the only MI-8 helicopter available, as the other MI-8 helicopter was not available for operation. Being the senior most technical tradesman Sgt Gupta, besides undertaking his own task of supervising the maintenance activities, worked relentlessly with other fellow technician and also assisted the aircrew in loading/unloading of the helicopter. On the 27th December, 1983, the MI-8 helicopter, in which he was travelling met with an accident and crashed into the cold Antartica waters. The helicopter was sinking fast and the entire crew of the helicopter, including Sgt. Gupta were trapped inside. Faced with a catastrophic situation, Sgt. Gupta displaying great presence of mind and courage, continued to try finding a way out of the helicopter in order to save the lives of the crew members. With the help of Flt. Lt. Rai, he managed to break open a passage through the cockpit wall of the helicopter and was instrumental in saving the valuable lives of the crew members.

Sergeant Shyam Behari Gupta thus displayed undaunted courage, initiative and devotion to duty of a high.

26. 1370413 Lance Naik Somasekharan Thambi, Engineers.

(*Effective date of the award* : 19*th January*, 1984)

Lance Naik Somasekharan Thambi was one of the members of the Third Indian Expedition to Antartica for the establishment of a permanent station. On the 19th January, 1984, a blizzard occured with heavy snow reducing visibility and dropping the temperature to minus 22 deg C. At this time, the external cladding of the second floor roof was in progress. Sensing the urgent need to go ahead with the construction, Lance Naik Somasekharan Thambi volunteered to climp up on the sloping roof to continue with the job of cladding. He worked undaunted on the sloping roof tied with a rope to avoid being blown away for almost 8 hours till he completed the job. It was a much risky job which he executed single handed.

In this action Lance Naik Somasekharan Thambi displayed conspicuous courage, initiative, fortitude and devotion to duty of a high order.

27. 14526234 Signalman Mahendra Kumar Sharma, Signals. (*Posthumous*)

(*Effective date of the award* : 27*th January*, 1984)

On the 27th January, 1984, Signalman Mahendra Kumar Sharma was travelling on leave by a Bihar State Govt. bus from Jahanabad to Kinjer District Gaya. Besides him there were 40 other passengers including 16 school children returning after participating in the Republic Day Parade at Jahanabad. The bus was suddenly stopped by about a dozen armed dacoits who started looting the passengers. Signalman M. K Sharma asked the passengers to resist the dacoits and not to give in. Finding that other passengers were not putting up resistance, he grappled with one of the dacoits in order to set a personal example for other passengers to resist. When he was asked by the dacoits to unload his luggage from the top of the bus, he refused to do so and continued to put up a gallant fight even though he had to face a large number of dacoits almost single handed. He was shot at point blank range by one of the dacoits as a result of which he died on the spot. However his resistance saved the life of large number of passengers including school children.

In this incident Signalman Mahendra Kumar Sharma displayed, undaunted courage, initiative, fearlessness and a high sense of public duty in the course of which he laid down his life.

28. Major Gurmukh Singh Dhillon (IC-25150), Artillery.

(*Effective date of the award* : 10*th February*, 1984)

On the 10th February, 1984 a massive fire broke out in poonch town, which engulfed several important offices. 51 Mountain Regiment personnel located close by rushed to the scene equipped with fire fighting equipment and started extinguishing the fire. Major Gurmukh Singh Dhillon was amongst the first to reach the scene. The alongwith six personnel of the Regiment climbed to the tin roof top of one of the buildings which engulfed by flames. He set a personal

example by fighting a pitched battle against fire for two and a half hours and was ultimately successful in controlling it.

In this incident Major Gurmukh Singh Dhillon displayed courage, leadership, initiative, organisational ability and devotion to public duty of a high order.

29. Captain Rakesh Chandra Kukrety (IC-32178), Rajput.

(*Effective date of the award*: 13*th February*, 1984)

On the night of the 13th/14th February, 1984, on receipt of information that an important Naga underground leader along with heavily armed associates was staying in village Shanevi, Captain Kukrety was detailed to carry out a cordon and search operation. He deployed his men very judiciously, plugging all the likely escape routes of the undergrounds. He then himself carried out a house to house search resulting in apprehension of four undergrounds alongwith appreciable quantities of weapons, ammunition, cash and important incriminating documents.

Captain Rakesh Chandra Kukrety thus displayed leadership, organisational capability, courage, daring and devotion to duty of a high order.

30. Shri Munshi Lal Verma, Assistant Treasurer, Aligarh H.P.O.

(*Effective date of the award*: 21*st February*, 1984)

On the 21st February, 1984, at about 7 p.m. Shri Munshi Lal Verma, Asstt. Treasurer, Aligarh Head Post Office alongwith Shri Jai Ram, caretaker was carrying cash in a box to the main treasury of the Aligarh Post Office from a nearby building. Due to electricity failure in the area, it was dark. The cash box was on the head of Shri Jai Ram and Shri Munshi Lal Verma was walking behind with a petromax in his hand. As soon as they reached the gate of the building, two miscreants attempted to snatch the cash box containing Rs. 2,22,291.40. Shri Jai Ram resisted and held on to the box. One of the miscreants at this stage fired a pistol at the chest of Shri Jai Ram which proved fatal. The first robber picked up the cash box and tried to run away. At this juncture Shri Munshi Lal Verma, finding no way out, attacked the robbers with the lighted petromax but the robbers managed to reach the spot where their scooter was parked. A third accomplice, who was waiting, tried to start the scooter. But miraculously the scooter fell down and all the three robbers fell under it. Taking advantage of this opportunity, Shri Munshi Lal Verma rained blows on them with the petromax, recovered the cash box and returned to the Head Post Office. The fatally injured Shri Jai Ram was rushed to hospital where he was declared dead.

Shri Munshi Lal Verma thus displayed exceptional courage, determination and devotion to duty of a high order.

31. Wing Commander Gajanan Damodar Shintre (10089), Flying (Pilot).

(*Effective date of the award*: 29*th February*, 1984)

On the 29th February, 1984, Wing Commander Gajanan Damodar Shintre was detailed for a general handling sortie with Flt Lt. PV Chaudhari. On being informed that the aircraft had developed some serious trouble, Wg Cdr Shintre promptly took over controls as the Captain of the aircraft. Assessing the situation he noticed that he was at a height of 3700 ft. He was left with two option to abandon the aircraft or to attempt a forced landing. He gallanty elected to force land rather than abandon the aircraft, even though his decision might have led to grave injuries to himself and his crew. Thereafter he executed a perfect forced landing mustering all his experience and skill at a very critical juncture and causing minimum damage to the aircraft.

Wing Commander Gajanan Damodar Shintre thus displayed conspicuous courage, professional skill and devotion to duty of high order.

32. Shri Huiningshumbam Nabachandra Singh, An Employee of a Private Petrol Pump of Manipur State.

(*Effective date of the award*: 15*th May*, 1984)

On the 15th May, 1984, while Shri Huiningshumbam Nabachandra Singh, an employee of a private petrol pump of Manipur State, was counting the day's sale proceeds inside the counter of the petrol pump, two young armed extremists with a revoler and a hand grenade raided the counter and snatched the sale proceeds. After snatching the money, one extremist stood guard at the counter and the other went inside in search of more money. At this moment, Shri Nabachandra Singh displaying great courage pounched upon the extremist. In the meantime, Shri Simon Jojo who was inside the counter jumped into the fray and snatched away the loaded revolver from him. Thereupon, the extremist made an attempt to lob the hand grenade inside the counter as a suicidal measure but this was also snatched away by Shri Nabachandra Singh. The extremist was ultimately overpowered and arrested. In the melee the other extremist who was standing outside managed to escape.

Shri H. Nabachandra Singh thus displayed conspicuous courage, bravery, coolness and a high sense of public duty.

33. Shri Simon Jojo, An Employee of a private Petrol Pump of Manipur State.

(*Effective date of the award*: 15*th May*, 1984)

On the 15th May, 1984, while Shri Huiningshumbam Nabachandra Singh an employee of a private petrol pump of Manipur State was counting the day's sale proceeds inside the counter of the petrol pump, two young armed extremists with revolver and hand grenade raided the counter and snatched the sale proceeds. Thereafter, one extremist stood guard at the counter and the other extremist went inside to search for more money. At this moment, Shri Nabachandra Singh displaying rare courage pounced upon the extremist. Shri Simon Jojo, who was already inside the counter, closed the door thereby shutting out the other extremist. He then joined Shri Nabachandra Singh and attacked the extremist with a stick and was able to snatch away the loaded revolver from him. Thereupon, the extremist made an attempt to lob the hand grenade inside the counter as a suicidal measure but this was also snatched away by Shri Nabachandra Singh. The extremist was ultimately overpowered and arrested. In the melee the other extremist who was standing outside managed to escape.

In this incident Shri Simon Jojo displayed conspicuous courage, coolness and a high sense of public duty.

34. Squadron Leader Suresh Haribhav Apte (9735), Flying (Pilot). (Retired).

(*Effective date of the award*: 18*th May*, 1984)

Squadron leader Suresh Haribhav Apte has been engaged in test flying duties at HAL Banglore complex since November, 1976. On the 18th May, 1984, Sqn Ldr Apte experienced an engine failure on his HPT-32 prototype aircraft due to fuel supply problems. He was at a height of 1000 ft. which was barely sufficient to make a forced landing at the airfield. However with great skill and cool courage he made a 90 deg. turn to finals at 50 ft altitude and made a perfect landing on the runway.

Squadron Leader Suresh Haribhav Apte thus disolayed undaunted courage, determination and devotion to duty of a high order.

35. Captain Harish Jit Singh (IC-30216), Army Service Corps.

(*Effective date of the award*: 18*th May*, 1984)

Captain Harish Jit Singh recently undertook a micro-light aircraft expedition from Kashmir to Kanyakumari. The expedition was launched from Srinagar on 7th April, 1984. On 9th April despite unfavourable weather conditions, he was able to cross the Pir Panjal ranges at Banihal Pass. On the 10th April, he took off from Banihal helipad and flow to Udhampur. The weather on this day was very turbulent and his machine swung like a pendulum. In the process, his seat harness slipped and he hung from his safety belt. Despite these trying conditions Captain Harish Jit Singh did not lose nerve and crossing patni Top landed safely at Udhampur.

Despite this trying experience, he had to make an emergency landing on a field short of Jullunder due to fuel shortage. Whilst taking off, his aircraft nose dived into a field which caused damage to the aircraft and slight injuries to the officer. On the 16th May, 1984, after taking off from

Tirunevalli he observed an imbalance in his machine and detected that one of the sparking plugs had been forced out of the socket and was hanging out. Inspite of numerous hazards he continued with the journey and landed at Kanyakumari on the 18th May, 1984. This is the first time that an expedition of this nature had been undertaken in our country which involved flying over the Pir Panjal mountain range as also over the plains sector across India during the pre-monsoon season, when the weather is turbulent and unpredictable. He covered a distance of 4170 Kilometers crosscountry and took 42 days to complete the mission.

In spite of being hurt, he still insisted on continuing with his mission. The expedition undertaken by Captain Harish Jit Singh has been a Saga of Courage, initiative, grit and determination which will greatly help the development of this sport in our country.

36. Group Captain Krishan Kumar Sangar, V.M (7017), Flying (Pilot).

(*Effective date of the award* : 3*rd June*, 1984)

Group Captain Krishan Kumar Sangar, Flying Pilot, is Commanding a Helicopter Unit since October, 1981. He was appointed the MI-8 Task Force Commander during an operational exercise somewhere in the Northern Sector. A variety of loads some of which had never been airlifted before, had to be dropped by Helicopters. The operations had to be carried out in an extremely hostile, snow bound terrain under marginal weather conditions. During this operation Group Captain Sangar achieved many firsts to his credit and was able to drop rations and stores at places located at elevations higher than 17,000 ft. On the 3rd June, 1984 while dropping an Arctic Hut at a dropping Zone, he had to fly his aircraft to its absolute limits to avoid any damage to the hut. This was possible due to his professional skill and sound understanding of his aircraft.

Group Captain Krishan Kumar Sangar thus displayed courage, professional competence, determination and devotion to duty of a high order.

37. 4261740 Sepoy Dip Narain Singh, (Posthumous) Bihar.

(*Effective date of the award* : 4*th June*, 1984)

On the 4th June, 1984 Sepoy Dip Narain Singh was ordered to man a Light Machine Gun Post. At about 0450 hours on the same day, terrorists brought down a heavy volley of fire from a well fortified building which was occupied by them. Sepoy Dip Narain Singh manned the Light Machine Gun Post continuously for 17 hours as it was not possible to relieve him during the day due to effective fire of the terrorists. He kept returning the fire throughout the day. Next day again he volunteered to man the same Light Machine Gun Post and kept neutralising seven to eight firing positions of the terrorists. He was firing so effectively that all the terrorists in the locality became desperate and directed all their-fire on him. On the 5th June, 1984 a burst of machine gun fire of the terrorists hit him on his forehead and he succumbed to the multiple skull injury.

Throughout this operation Sepoy Dip Narain Singh displayed strong determination, indomitable courge, exemplary personal bravery and devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

38. Major Baldev Raj Bhatia (IC-21857), Guards.

(*Effective date of the award* : 5*th June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star' 10 Guards was tasked to clear a complex of terrorists. 'A' Company under Major Baldev Raj Bhatia had been assigned the task of clearing the left portion of the building. As the leading platoon entered the building it came under heavy fire of automatic weapons from all sides of the complex. The terrorists also lobbed hand grenades through doors, windows and ventilators. Undaunted by the effective fire of the extremists and in complete disregard of his personal safety, Major Baldev Raj Bhatia moved forward at the head of the column and personally led his men to maintain the momentum of the operation and successfully accomplished the assigned mission.

In this action Major Baldev Raj Bhatia displayed conspicuous bravely, resolute determination, cool courage, very fine leadership and devotion to duty of a very high order.

39. Major Prakash Chand Katoch (IC-24006), Parachute Regiment.

(*Effective date of the award* : 5*th June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, Major Prakash Chand Katoch, while leading a Team Group through the Main Enterance of a building complex, came under heavy Light Machine Gun fire directed by the extremists from a dominating and impregnable position. At one stage he was confronted with a Sten Machine carbine burst which he absorbed on his bullet proof jacket and reacting quickly returned fire killing the extremist and thereby preventing any casualties to his men. Inspite of the heavy odds he led his men into the first assault through a near impenetrable belt of fire. In the process he received a burst of machine gun fire on his right shoulder. But refusing to be evacuated he undauntedly maintained his advance and managed to reach his objective.

In this action Major Prakash Chand Katoch displayed valour, indomitable courage, effective leadership and devotion to duty of a very high order.

40. Captain Krishna Sreekara Prabhu (IC-32823), The Maratha Light Infantry.

(*Effective date of the award* : 5*th June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984 Captain Krishna Srcekara Prabhu was the Second in Command of a Company group which was tasked to undertake an anti-terrorist operation. The mission involved flushing out of hard core terrorists from a building complex. Captain Prabhu was given the task of occupying the main gate of the building which housed the terrorist armoury in the top portion. Any attempt to advance towards the implacements involved an obvious and frontal fire of the terrorists. Despite the obvious hazards, Captain K. S. Prabhu climbed the high walls adjacent to the armoury with lightning speed and personally led his men to the top of the gate despite heavy firing of the terrorists. He then led a gallant charge and destroyed the hostile emplacements. In the process, he was subjected to automatic fire from a nearby building. He then personally neutralised the fire which resulted in injury to a terrorist and recovery of a shot gun. Subsequently, during the mopping up operation, he was responsible for capturing two proclaimed terrorists, two rifles, two 12 bore guns and 100 rounds of ammunition.

Captain Krishna Sreekara Prabhu thus displayed undaunted courage, tremendous initiative, resolute determination, exemplery personal bravery, leadership and devotion to duty of a very high orders.

41. Lieutenant Tara Chand (IC-40046) Rajput.

(*Effective date of the award* : 5*th June*, 1984)

Lieutenant Tara Chand of 2 Rajput was commanding a platoon during anti-terrorist operations. On the night of the 5th/6th June, 1984 his platoon was given the task of clearing terrorists from a building complex. As his platoon was approaching the building, the terrorists from one of the rooms brought heavy and effective fire on the platoon thereby preventing any move forward. Lieutenant Tara Chand who was leading his platoon was injured in his right leg by this fire. But unmindful of his injury he crawled forward from a side and killed the terrorists who were holding up the advance of his platoon. This enabled his platoon to resume its advance and accomplish its mission successfully.

In this action Lieutenant Tara Chand displayed indomitable courage, initiative, leadership and devotion to duty of a very high order.

42. JC-90455 Subedar Badal Ghosh, Rajput.

(*Effective date of the award* : 5th *June*, 1984)

Subedar Badal Ghosh of 2 Rajput was commanding a platoon during anti-terrorist operations. On the night of the 5th/6th June, 1984, his platoon was given the task of clearing a heavily fortified and strongly held building complex. As his platoon entered the precincts of the building, it came under heavy and effective fire of the terrorists as a result of which the advance of his platoon was stalled. At this point in utter disregard of his personal safety Subedar Ghosh charged the fortification alongwith a section strength and in the process killed two of the terrorists and forced three others to surrender. He completed the assigned mission successfully.

In this action Subedar Badal Ghosh displayed conspicuous bravery, courage, strong determination, exemplary leadership and devotion to duty of a high order.

43. 4150739 Naib Subedar Nayan Singh, (*Posthumous*) Kumaon.

(*Effective date of the award* : 5th *June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during anti-terrorist operations, 'C' Company of 9 Kumaon was tasked to capture the second flour of a massive three storied building. There was only one central staircase which led to all the rooms upstairs and the companies were forced to use it to reach their objective. While Naib Subedar Nayan Singh was leading his platoon up the staircase, it came under effective fire of automatic weapons of the terrorists. With complete disregard for his personal safety, Naib Subedar Nayan Singh lobbed a hand grenade at the terrorist position and charged up the stairs firing his carbine. In spite of the grenade having been lobbed, one of the terrorists was still alive and fired at Naib Subedar Nayan Singh thereby wounding him mortally.

Naib Subedar Nayan Singh thus displayed conspicuous bravery, great initiative, strong determination leadership, devotion to duty of very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

44. 13664504 Naib Subedar Harnam Singh, Guards.

(*Effective date of the award* : 5th *June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', 'A' Company of 10 Guards was given the task of clearing the left wing of the main entrance of an important building complex of terrorists. The buildings were heavily fortified and strongly held by highly motivated terrorists. Naib Subedar Harnam Singh was the leading platoon commander. Immediately on entering the building complex, his platoon came under intense and accurate fire of automatic weapons and hand grenades of the terrorists. He quickly deployed the Medium Machine Gun Detachment grouped with the platoon and under the covering fire of this detachment, personally led his platoon forward. After a while, the Machine Gun Detachment also came under effective automatic fire. Even though his platoon was in the open without any covering fire, Naib Subedar Harnam Singh maintained his cool and successfully led his platoon on to the objective.

Naib Subedar Harnam Singh thus displayed cool courage, resolute determination, exemplary personal valour, leadership and devotion to duty of a very high order.

45. 13667576 Naib Subedar Salet Singh, Guards.

(*Effective date of the award* : 5th *June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', 10 Guards was given the task of flushing out the terrorists from an important building complex. Naib Subedar Salet Singh was the leading platoon Commander for clearing the left wing on the main entrance of the building. As soon as his platoon arrived at the entrance, it came under heavy automatic fire of the terrorists from the flanks as well as from the roof tops. As he was deploying the Medium Machine Gun Detachment grouped with his platoon, effective fire was directed from the front and hand grenades were thrown from the rooms thereby making the advance very difficult. Naib Subedar Salet Singh did not lose his cool, and in disregard to his personal safety, took another section to a flank leading them personally through the effective fire of the terrorists. On reaching the flank, he quickly deployed his Rocket Launcher Detachment to fire a rocket to destroy the terrorist gun post and succeeded in silencing it. However, the terrorists threw a hand grenade on him from a room thereby seriously injuring him in his left arm. Unmindful of his injury and with utter disregard to his personal safety he personally led one of his sections and cleared the room from where the fire was coming killing two of the terrorists and capturing a box of grenades.

Naib Subedar Salet Singh thus displayed conspicuous bravery, cool courage, initiative, determination and devotion to duty of a very high order.

46. 2970429 Havildar Atul Kumar Mondal, Rajput.

(*Effective date of the award* : 5th *June*, 1984)

Havildar Atul Kumar Mondal of 2 Rajput was commanding a section of the leading platoon of the Company during anti-terrorist operations. On the night of the 5th/6th June, 1984, his section was given the task of searching a building suspected to be occupied by terrorists. As havildar Atul Kumar Mondal approached the first room, he was fired upon from inside and hit on his face. Displaying absolute disregard to his injury and personal safety, he charged into the room and killed the terrorist who was firing. This enabled his section to continue the cltaring operation.

Havildar Atul Kumar Mondal thus displayed initiative, conspicuous courage, and devotion to duty of a high order.

47. 4158937 Havildar Bhupal Singh, Kumaon Regiment.

(*Effective date of the award* : 5th *June*, 1984)

On the night of the 5th and 6th June, 1984, 'D' Company was asked to occupy an important complex during operation 'Blue Star'. Major UK Dube Company Commander ordered his platoon to silence the medium machine gun which was covering the entrance to the place and causing great casualties to own forces. Havildar Bhupal Singh alongwith his men directly charged the medium machine gun without any consideration to his own safety. He was, however, hit by a medium machine gun bullet and fell on the ground. Since the medium machine gun was still firing he crawled to the steps leading to the main entrance of the place and silenced the medium machine gun by lobbing a grenade and immediately charging the medium machine gun position. In the process he killed five terrorists single handed and secured the main entrance.

In this action Havildar Bhupal Singh displayed exceptional bravery, courage, leadership and devotion to duty of a very high order.

48. 4048545 Havildar Betal Singh Mandral. (*Posthumous*) Garhwal Rifles.

(*Effective date of the award* : 5th *June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star' 9 Garhwal Rifles was tasked to flush out the terrorists from a building complex. Havildar Betal Singh Mandral though a low medical category Non Commissioned Officer insisted on taking part in this operation to lead his section. On reaching the objective the Company Commander ordered Havildar Betal Singh Mandral to move forward with his section from the left flank and eliminate opposition which was holding up the progress of the Company. Unmindful of the danger, Havildar Betal Singh Mandral alongwith his section charged down a staircase, the only entry to the objective. In the process, one of his men was killed and he himself was wounded. Unmindful of his injury, he charged on the terrorist machine gun post firing his carbine and successfully silenced it. In the process he was again hit by the burst of another automatic weapon fire and was killed on the spot. His action, however, greatly helped his platoon fulfilling its mission.

Havildar Betal Singh Mandral thus displayed conspicuous bravery, tremendous initiative, indomitable courage, determination, leadership, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

49. 13668128 Havildar Het Ram, Guards.

(*Effective date of the award* : *5th June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', 'B' Company of 10 Guards was tasked to clear terrorists from the Northern wing of an important building. The building complex was heavily fortified and strongly held by highly motivated terrorists. Havildar Het Ram who was the Section Commander of the loading section was immediately behind the first two scouts of his section. After having cleared the first two rooms as Havildar Het Ram moved towards the third room, intense fire was brought on his section in which he was wounded. Unmindful of his injury, he dashed towards the third room, broke open the door and lobbed a hand grenade inside. While lobbing the grenade, he received a second bullet injury and charged inside the room and killed all the four terrorists inside the room with his carbine.

In this action Havildar Het Ram displayed conspicuous bravely, initiative, strong determination, indomitable courage, leadership and devotion to duty of a very high order.

50. 13668231 Havildar Harminder Singh, Guards.

(*Effective date of the award* : *5th June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', 'B' Company of 10 Guards was tasked to capture the first and second floors of an important building complex. Havildar Harminder Singh's section was detailed to clear the first room of the first floor so that a foothold could be gained for the rest of the platoon to accomplish its mission. Both the leading Jawans were wounded by automatic fire of the terrorists near the stair case. Havildar Harminder Singh exhibiting great initiative decided to enter the first floor himself with the help of an aluminium ladder. Under heavy and effective fire of the terrorists he successfully climbed the stairs with lightning speed. With resolute determination and in utter disregard of his personal safety, he succeeded in establishing a foothold.

In this action Havildar Harminder Singh displayed indomitable courage, bravely, resolute determination, leadership and devotion to duty of a very high order.

51. 2553714 Lance Havildar Kuppuswamy, (*Posthumous*) The Madras Regiment.

(*Effective date of the award* : *5th June*, 1984).

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', 4 Madras (WLI) was given the task of clearing terrorists from one of the buildings. Lance Havildar Kuppuswamy was one of the section Commanders of the leading platoon, and was given the task of flushing out terrorists, hiding in one of the rooms on the first floor of the building. On reaching the building, his section came under heavy fire of the terrorists. While the section was negotiating the staircase and moving towards the door, Lance Havildar Kuppuswamy was shot at the chest. Undeterred by his injury and without caring for his personal safety, he led his section to the room and managed to kill one terrorist and captured five others and thus successfully accomplished the assigned mission. Lance Havildar Kuppuswamy later succumbed to his injury.

In this action Lance Havildar Kuppuswamy displayed conspicuous bravery, cool courage, strong determination, exemplary leadership, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

52. 13608755 Naik Girdhari Lal Yadav, (*Posthumous*) Parachute Regiment.

(*Effective date of the award* : *5th June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', Naik Girdhari Lal Yadav was a squad Commander of a Team Group which was given the task of securing a building. The building complex had been heavily fortified and was strongly held by highly motivated terrorists. As soon as they entered the building the entire Team Group came under heavy machine gun fire which made further advance difficult. Naik Girdhari Lal Yadav rallied his men together and personally led the advance. He was hit by a burst of machine gun on his left arm. Unmindful of his injury he rushed to the gun post and lobbed a hand grenade thereby successfully silencing it. In the process he was hit in the face by another burst of machine gun fire due to which he died on the spot.

In this action Naik Girdhari Lal Yadav displayed indomitable courage, determination, valour, leadership, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

53. 2577937 Naik Madhusoodhanan Pillai KG, Madras Regiment.

(*Effective date of the award* : *5th June*, 1984)

Naik Madhusoodhanan Pillai KG of C Coy 26 Madras was engaged in the Operation against the extremists holding defences in and around an important building complex. On the night of the 5th/6th June, 1984, C Coy had been given the task of clearing the extremists from the southern area of one of the buildings. The Company was to move forward after the leading company had established a foothold on the ground floor of the building. However, the operation was held up because of heavy fire from a Light Machine Gun sited by extremists on a tower. At this critical juncture Naik Madhusoodhanan Pillai KG rushed forward and after a pitched battle in which he received injuries, was able to silence the Light Machine Gun. This greatly helped the company in achieving its objective.

Naik Madhusoodhanan Pillai KG thus displayed conspicuous courage, initiative, bravery and devotion to duty of a very high order.

54. 4168587. Lance Naik Ram Bahor Singh, (*Posthumous*) Kumaon Regiment.

(*Effective date of the award* : *5th June*, 1984)

Lance Naik Ram Bahor Singh was the Light Machine Gun Number 2 of the leading section of 'A' Company of 15 Kumaon Regiment. On the Night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star' a Company led by Major B. K. Misra was tasked to flush out the terrorists from an important building complex. The Company advance towards its objective was stalled by heavy machine gun fire from all directions. At this stage, Major B. K. Misra stormed the terrorists position. Suddenly Lance Naik Ram Bahor Singh saw a machine gun barrel coming out of a post hole in the basement of the building. Realising that the life of his Company Commander was in danger and that his detachment commander Lance Naik Nirbhay Singh was wounded, Lance Naik Ram Bahor Singh rushed forward to overtake his Company Commander and thus provide necessary protection to him. In this process he was hit by a burst of machine gun fire on his head which proved fatal.

In this action Lance Naik Ram Bahor Singh displayed conspicuous bravery, cool courage, devotion to duty of a high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

55. 13673724 Lance Naik Manroop Singh, (*Posthumous*) Brigade of the Guards.

(*Effective date of the award* : *5th June*, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during Operation 'Blue Star' 'D' company was tasked to clean one of the buildings of an important complex of terrorists. The building was heavily fortified and strongly held by terrorists. Lance Naik Manroop Singh was in the leading platoon. He quickly deployed himself near the pillar at the entrance of the building to cover the move of his platoon. One of the jawans of the platoon entered the room and started firing with his weapon. Before the others could enter a hand grenade was thrown from an adjoining room by the terrorists. Lance Naik Manroop Singh thereon took charge of the gun himself. Seeing that three terrorists were

approaching to snatch his weapon, he quickly fired at the terrorists killing all of them. In this action he was wounded and also had a stab injury inflicted by one of the terrorists. In spite of the injury, this gallant NCO forged ahead moving along the pillars and managed to enter the fourth room. He sprayed bullets into the room with his LMG killing three terrorists inside the room. As he was coming out of the room he was hit by a direct burst of automatic fire of the terrorists and died on the spot.

Lance Naik Manroop Singh thus displayed conspicuous bravery, cool courage, great alertness, determination, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

56. 13677059 Lance Naik Major Singh, Brigade of the Guards.

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

One the night of the 5th/6th June, 1984, 'A' Coy of 10 Guards was tasked to flush out terrorists from an important building complex during operation 'Blue Star'. The building was heavily fortified and strongly held by terrorists. Lance Naik Major Singh was deployed to give the covering fire when the platoon advanced. As soon as they entered the main gate, heavy automatics fire was directed at them from the roof. With scant regard to his personal safety Lance Naik Major Singh rushed through the fire and deployed himself to engage the terrorists. The LMG had to be moved from pillar to pillar to cover the advance of the platoon. When they reached the eighth room, heavy fire was drawn from the front also and the terrorists started throwing hand grenades from holes made in the rooms Lance Naik Major Singh was left in the open getting fire from all directions. With utmost steadfastness and courage of the highest order, he kept returning fire and killed one of the terrorists. Lance Naik Major Singh then rushed forward and killed the terrorist in the room in front of him but in the process got wounded. He refused to be evacuated till the completion of the task assigned to his platoon.

In this action Lance Naik Major Singh displayed bravery, indomitable courage, great determination and devotion to duty of a very high order.

57. 13611199 Lance Naik Bhagirath Mal *(Posthumous)* Parachute Regiment.

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star' the Special Commando unit was tasked to flush out terrorists from an important building complex. Lance Naik Bhagirath Mal was in the leading hit team. On reaching the building, the platoon came under heavy automatic fire. Lance Naik Bhagirath Mal started hurling gas grenades at the terrorists position thereby neutralising the fire of the terrorists for some time. In the process he was wounded seriously but kept advancing and hurling gas grenades at a very strong terrorist position thereby saving his entire platoon. He continued the same till he was killed by a heavy volley of automatic fire of the terrorists.

Lance Naik Bhagirath Mal thus displayed indomitable valour, determination, leadership, devotion to luty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

58. 3972319 Lance Naik (Cook) Mangloo Ram, Dogra Regiment.

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during anti-terrorists operation, Lance Naik (Cook) Mangloo Ram was asked to from part of a rifle section. His Company was assigned the task of flushing out the terrorists from an important building complex. The complex was heavily fortified and strongly held by highly motivated terrorists. Lance Naik Mangloo Ram always remaintd in the forefront and in utter disregard for his personal safety, repeatedly went forward and courageously killed many terrorists. In the process, he was seriously wounded. Undaunted by his injury he cleared two more rooms. He was again hit by the burst of machine gun fire and was seriously wounded and had to be evacuated.

Lance Naik (Cook) Mangloo Ram thus displayed indomitable courage, strong determination, commendable initiative, bravery and devotion to duty of a very high order.

59. 13679223 Guardsman Wazir Khan, *(Posthumous)* Brigade of the Guards.

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', 'D' Company of 10 Guards was tasked to capture a portion of an important building complex. The complex was heavily fortified and strongly held by terrorists. Having cleared the first three rooms, the advance of the Company was slowed down due to heavy automatic fire coming from one of the rooms. The Company Commander took the initiative and personally led his men in this operation and was injured. Guardsman Wazir Khan who was moving immediately behind his company Commander, in utter disregard for his personal safety, dashed towards the room from were the fire was coming. He managed to lop a hand grenade through a hole into the room and succeeded in silencing the automatic weapon. In the process he was hit directly and died on the spot.

Guardsman Wazir Khan thus demonstrated valour, indomitable courage, tremendous initiative, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest tradition of the Army.

60. 13613912 Paratrooper Ramesh Kumar Khajuria, Parachute Regiment. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during anti-terrorist operation, Paratrooper Ramesh Kumar Khajuria was part of Team Groups of 1 Para which was given the task of flushing out terrorists from a building. Paratrooper Khajuria was in the forefront. After having reached the objective he was hit in his legs by a burst of machine gun fire. Unmindful of his injury he managed to crawl forward under heavy fire and evacuated two casualties of his Team Group to a place of safety. In his next attempt to recover their weapons, he received a burst of machine gun fire in his face and died on the spot.

Paratrooper Ramesh Kumar Khajuria thus displayed initiative, commendable courage, valour, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

61. 4174558 Sepoy Hira Singh, Kumaon. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during anti-terrorist operation, 9 Kumaon was tasked to flush out the terrorists from one of the buildings. The complex had been heavily fortified and was strongly held by highly motivated terrorists. The Company of Sepoy Hira Singh came under intense and accurate fire of automatic weapons of the terrorists which hampered the progress of its operation. Sepoy Hira Singh in utter disregard of his personal safety, rushed towards the machine gun post of the terrorists which was holding up the Company operation and successfully silenced it by lobbing a grenade. In the process, he was hit by a burst of machine gun fire and died on the spot. Thus he saved the lives of his comrades and enabled his Company to successfully accomplish its mission.

In this action Sepoy Hira Singh displayed initiative, indomitable courage, bravery, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

62. 2583479 Sepoy C. Rayappan, Madras. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during anti-terrorist operations, 26 Madras was tasked to flush out the terrorists from the Southern Wing of an important building complex. The complex was heavily fortified and was strongly held by highly motivated terrorists. The company to which Sepoy C. Rayappan belonged was assigned the task of flushing out terrorists from an important building. Sepoy C. Rayappan's platoon was ordered to lead the operation into the most powerful base of the terrorists. He led the advance of his section and stormed into the building. The platoon got held up due to intense and accurate fire of the terrorists from three to four directions and there was danger of the entire platoon getting wiped out. At this juncture, Sepoy C. Rayapan in utter disregard of his personal safety made a frontal charge on the terrorists position. In this process he was hit directly and died on the spot.

Sepoy C. Rayappan thus displayed strong determination, commendable initiative, bravery, courage, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

63. 2584772 Sepoy Ravi Kumar A, Madras Regiment.

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during the Punjab Operation against extremists, 'C' Company was given the task to capture the first floor of the Western building of a building complex. After the Company had successfully captured the objective, Sepoy Ravi Kumar A. heard some noise from an area dominating his position. He took one man with him and went up the stairs to the top. Suddenly he found a grenade being hurled at him. Very quickly he picked up the grenade and threw it out towards the ground floor and resumed his advance. The extremists then hurled a smoke grenade at Sepoy Ravi Kumar and he sustained burns over his hands and body. Despite his injuries he grabbed the barrel of the Light Machine Gun and lobbed a grenade through a hole silencing the extremists inside.

Sepoy Ravi Kumar A. thus displayed indomitable courage, determination, initiative and devotion to duty of a very high order.

64. 4064688 Rifleman Hari Singh. Garhwal Rifles. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the 5th/6th June, 1984, during Operation 'Blue Star', 9 Garhwal Rifles was tasked to clear an important building complex of terrorists. The building complex had been heavily fortified and was strongly held by the terrorists. Rifleman Hari Singh's section was ordered to assault the terrorists position which was holding up the advance of the company. Terrorists had sited a machine gun in the corridor behind a pillar and the only approch to it was by moving from pillar to pillar. The section attempted to clear the terrorist position but the section commander was mortally wounded and the machine gun was still effectively interfering with the movement of own troops Rifleman Hari Singh on his own initiative took upon himself the task of a silencing the machine gun. He attempted to approach the machine gun post from behind the pillars but came under heavy fire from a flank and was hit by a bullet in his left arm. However, he remained totally unmindful of his injury, threw a hand grenade towards the machine gun post and before the terrorists could recover from the blast of the grenade charged down the corridor firing his rifle and bayoneted the machine gun crew of the terrorists. In the process he was caught under effective fire of another machine gun of the terrorists and before he could take cover, was hit by a burst of fire and died on the spot.

Rifleman Hari Singh thus displayed initiative, conspicuous courage, determination, valour and laid down his life in the highest traditions of the Army.

65. 62521 Trn Ram Bahadur, Special Frontier Forces, Commando Unit. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 5th June, 1984)

On the night of the 5th/6th June, 1984, during Operation 'Blue Star', Trn Ram Bahadur was part of a platoon detailed to clear the corridor of a heavily fortified and strongly held building Trn Ram Bahadur while carrying out room clearance was hit by a machine gun burst. Unmindful of his injury and without caring for his personal safety, he continued moving forward with his team and refused to be evacuated. Even after having been wounded, he cleared three more rooms and killed four terrorists. In the process he died due to excessive loss of blood.

Trn Ram Bahadur thus displayed resolute determination, indomitable courage, valour devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

66. 4165151 Havildar Kalyan Singh, Kumaon.

(Effective date of the award : 6th June, 1984)

On the morning of the 6th June, 1984, during anti-terrorist operations, Havildar Kalyan Singh was tasked to clear terrorists hide out in one of the underground chambers of a building complex. The entry was confined to a narrow staircases which permitted only two persons at a time. Havildar Kalyan Singh on his own initiative broke open the door, lobbed two hand grenades into the chamber and simultaneously rushed to the doorway firing. There was sporadic rifle fire from the deeper recessed of the chamber. Suddenly, approximately eighty terrorists rushed out of the room terrified by the grenades and sten fire not realising that this was the act of a single man. Havildar Kalyan Singh alongwith an NCO entered the chamber and cleared it and recovered two rifles and a large quantity of ammunition.

Havildar Kalyan Singh thus displayed singular courage, tremendous initiative, bravery, leadership and devotion to duty of a very high order.

67. 4172990 Sepoy Raghu Nath Singh, Kumaon. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 6th June, 1984)

On the 6th June, 1984, Sepoy Raghu Nath Singh was the Radio Operator with Major B.K. Mishra, during anti-terrorist operations. During the course of action, Major B. K. Mishra fell fighting when Sepoy Raghu Nath Singh was some 25 metres behind his Company Commander. Sepoy Raghu Nath Singh rushed to rescue his Company Commander in utter disregard of his own safety. On reaching the spot he realised that his Company Commander was no more alive. He immediately picked up the carbine of Major B. K. Mishra and rushed forward towards the terrorist position but was hit by a heavy volume of fire and died on the spot.

Sepoy Raghu Nath Singh thus displayed courage bravery, determination, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

68. 4173944 Sepoy Jagdish Chandra, Kumaon. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 6th June, 1984)

On the 6th June, 1984, during anti-terrorist operation, 'D' Company was tasked to clear a building which was held by highly motivated terrorists. The Company was held up at the base of the building due to very heavy fire of the terrorists. Sepoy Jagdish Chandra saw a machine gun firing from the top of the stairs leading to the first floor of an adjoining building. With utter disregard for his personal safety Sepoy Jagdish Chandra rushed forward, charged at the machine gun post and successfully silenced it enabling his Company to accomplish its mission. In the process he was hit directly and died on the spot.

Sepoy Jagdish Chandra thus displayed tremendous initiative, indomitable courage, bravery, strong determination,

devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

69. 2872071 Lance Naik Dilbag Singh, Rajputana Rifles.

(Effective date of the award : 7th June, 1984)

On the night of the 7th/8th June, 1984, during anti-terrorist operation, Lance Naik Dilbag Singh was part of a search party which was tasked to flush out the terrorists from a building. When the raiding force reached its objective the terrorists fired a connon shot and also started firing from the roof top of the building. On hearing the battle cry of his Company Commander Captain K. S. Chaudhary, he alongwith his Company Commander dashed headlong on to the cannon emplacement on the boundary wall. Without caring for the flying bullets, he crossed over the boundary wall and found his company commander grappling with a terrorist carrying a dagger. He immediately pounced upon the terrorist helping his Company Commander in capturing the cannon and also saving him from grave physical danger.

Lance Naik Dilbag Singh thus exhibited tremendous initiative, strong determination, exemplary valour and devotion to duty of a very high order.

70. Captain Shyam Sunder Rampal (MS11027), *(Posthumous)*
Army Medical Corps.

(Effective date of the award : 8th June, 1984)

Captain Shyam Sunder Rampal was Regimental Medical Officer, 10 Dogra, during operation 'Blue Star'. On the 8th June, 1984, the battalion was in the process of occupying an important building complex when Sepoy Arjun Singh of the unit sustained bullet injuries and was seriously wounded. On hearing of the seriousness of the casualty, Captain Shyam Sunder Rampal immediately rushed to the site to provide medical care to the injured jawan. While providing medical aid, he came under heavy fire of the terrorists and was seriously wounded. The terrorists who were at close range managed to drag the wounded Captain Shyam Sunder Rampal and an other rank inside their room where they were killed.

In this action Captain Shyam Sunder Rampal displayed conspicuous courage, valour, initiative, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

71. Wing Commander Tajinder Pal Singh Chhatwal, VM (11290, Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 25th July, 1984)

Wing Commander Tajinder Pal Singh Chhatwal was selected to undertake an important task of air maintaining troops at very high altitudes. In view of the ever changing scenario of the exercise and great urgency of supplies, Wing Comdr. T.S. Chhatwal commenced the mission immediately. The precision drops carried out by him speak of his professional competence. Later due to subsequent developments, the camp had to be shifted to a steep slope where the stock of supplies turned very critical. Wing Comdr. Chhatwal had to fly at 5—10 metres above the ground. Undeterred, on the 25th July, 1984, he continued his mission and in all 17 tons of load was free dropped at the new Camp. In another remarkable feat, Wing Comdr. Chhatwal flew the helicopter at altitudes higher than 5.7 kms for over an hour, while carrying out the task of filming. He flew 42 sorties in one single day airlifting more than 23 tons of load to the forward posts.

Wing Commander Tajinder Pal Singh Chhatwal thus exhibited professional competence, acumen, courage and devotion to duty of a high order.

72. 643826 Corporal Charivukalayil Govindan Soman, Air Frame Fitter.

(Effective date of the award : 31st July, 1984)

Corporal Charivukalayil Govindan Soman, Air Frame Fitter volunteered to be a member of a Technical Team required to retrieve of two Cheetah Helicopter which had force landed at an elevation of about 18000 feet, during an air maintenance mission. The operations involved imaginative planning and clock like precision in dismantling, pecking and hooking of loads under the helicopters. When the retrieval operations were launched corporal Soman was only Air Frame Fitter left in the team to carry out dismantling of complete helicopters at the locations. Fully aware of the heavy responsibility he worked for hours unmindful of the personal discomfort and the health hazard. He finally achieved four days task in only one and a half days. At the base camp also he was instrumental in timely rectification of snags on a number of helicopters and displayed exemplary zeal and enthusiasm throughout the period.

On the 31st July, 1984, he was redeployed to retreive the second helicopter. However due to an incident the party was left at very high altitude, without shelter or food. Corporal Soman took initiative to walk to the nearest Army Camp which involved three hours walking in the face of great danger of sliping into a crevace. When one of his colleagues fell into a crevace he stepped ahead and saved his life.

Corporal Charvukalayil Govindan Soman thus displayed dedication, courage professional skill and devotion to duty of a high order.

73. 5443621 Havildar Krishna Bahadur Gurung, 5th Gorkha Rifles.
(Posthumous)

(Effective date of the award : 5th November, 1984)

On the night of 5th/6th November, 1984, same miscreants were firing indiscriminately at defenceless civilians in Paharganj area of Delhi. Company Commander Major Yashjit Singh Tiagi rushed to the place and divided his partly into three groups to encircle the building occupied by the miscreants, Havildar Krishna Bahadur Gurung, a member of the Party, climbed on the roof of the building. He surprised the miscreants by his swift action and was about to overpower them when one of the miscreants hidden behind a wall fired at him from close range of usly bleeding Havildar Krishna Bahadur Gurung dragged himself towards the of the roof guided his men by shouts to approach the building from a different direction and at the same time even though seriously wounded kept the miscreants at bay by continuously firing thus diverting their attention from the more of the other group. He refused to be evacuated till his Company Commander confirmed to him that all miscreants have been apprehended. He was taken to the hospital in a serious condition where he succumbed to his injuries.

Havildar Krishna Bahadur Gurung thus displayed cool courage, valour, tremendous initiative, strong determination and devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

S. NILAKANTAN
Deputy Secretary to the President

MINISTRY OF INDUSTRY AND COMPANY AFFAIRS

DEPARTMENT OF COMPANY AFFAIRS

New Delhi-1, the February 1985

ORDER

No. 27/9/85-CL. II.—In exercise of the powers conferred by clause (ii) of sub-section (1) of Section 269-A of the Companies Act, 1956 (I of 1956), the Central Government hereby authorised Shri Rakhaldas Mukherjee, Assistant Inspecting Officer in the Department of Company Affairs, for the purpose of the said Section 209-A.

C. L. PRATHAM, Under Secy.

(DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT)

DIRECTORATE GENERAL OF TECHNICAL DEVELOPMENT

New Delhi, the 19th February 1985

RESOLUTION

No. Cer. 11(21)/83-Vol. V.—In partial modification of Government of India Resolution No. Cer. 11(21)/83-Vol. IV dated 22nd September, 1983 as amended vide Resolution No. Cer. 11(21)/83-Vol. IV dated 21st November, 1983, it has been decided to appoint Shri N. Biswas Dy. Director General in the Office of Directorate General of Technical Development, Udyog Bhavan, New Delhi as Chairman of Development Panel for Ceramic Industry in place of Shri R. Thanjan Industrial Adviser, DGTD who has since retired.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned. Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. C. GANJWAL, Director Administration

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 16th February 1985

No. F. 10-3/85-U. 5.—Under Rules 3, 6 and 10 of the Memorandum of Association and Rules of the Indian Council of Social Science Research, the Government of India have decided to nominate :

(i) Shri Anand Sarup, Secretary, Ministry of Education, as a member of the Council *vice* Smt. Serla Grewal for the residual term of Smt. Grewal, i.e., upto 4-3-1987; and

(ii) Miss Roma Mazumdar, Secretary, Ministry of Social and Womens' Welfare, as a member of the Council *vice* Shri R. P. Khosla for the residual term of Shri Khosla, i.e. upto 19-12-1986.

S. K. SENGUPTA, Under Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1985